आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 60 अंक 11

नवम्बर, 2003 कार्तिक, 2060

अहिंसा

परमो धर्म...

अहिंसा धर्म को मुल्य देती है।
धर्म जीवन को मौल्यवान
आभूषण चढाता है।

आर. सी. आभूषण – शुध्द – शुभ – सुंदर

टीप : निवास व्यवस्था पूर्व
सूचना मिलने पर की जाएगी।

malhar 11.5x19/1474

पारस महल
चांदी
बरतन शोरूम

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सुभाष चौक, जलगांव, दूरभाष्य : २२२३९०३, २२२५९०३, २२२२६२९,३०
हमारी कहीं भी शाखा / एजंट नहीं.

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरूम
डायमंड शोरूम

• हाजिर स्टॉक • भरपूर डिझाईन्स • अनुपम कलाकारी • गहनों पर शुद्धता अंकित • पारदर्शक व्यवहार •

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

● **प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182—183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● **सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
3 K 24—25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291—2730081

● **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100+(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परिजुण्णेहिं वत्थेहिं,
होक्खामि त्ति अचेलए।
अदुवा सचेलए होक्खं,
इइ भिक्खू न चिंतए।।
—उत्तराध्ययन सूत्र २.१२

**फटे-जीर्ण वस्त्रों के कारण,
वस्त्र रहित हो जाऊँगा।
मन में भाव न ऐसा लाए,
अब नये वस्त्र को पाऊँगा।।१२।।**

नवम्बर 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
कार्तिक, 2060

वर्ष : 60 **अंक** : 11

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

अपने कायाकल्प हेतु प्रभु से प्रार्थना	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	9
साधक के लिए आवश्यक है इच्छा जय	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
स्वाध्याय और साध्वाचार	: महान्‌अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	18
आदर्श मुनि–जीवन	: पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजय जी म.सा.	25
क्रोध–विजय के व्यावहारिक उपाय	: श्री सम्पतराज डोसी	29
बालकों के आवश्यक संस्कार	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	34
भारतीय संविधान और जैन अल्पसंख्यक	: श्री आर.एम. कोठारी	39

विचार/प्रश्नमंच/यात्रा

चिन्ता को मिटाने वाली साधना	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	24
अमृत–वचन	: श्री प्रेमचन्द कोठारी	38
आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ(6)	: श्री धर्मचन्द जैन	42
जन्म से मृत्यु तक की यात्रा	: श्री नेमीचन्द जैन	46

कथा/कविता/प्रेरक–प्रसंग

पूज्य हीरा–गुरु गुणाष्टकम्	: पं. लक्ष्मण वासुदेव माण्डवगणे	6
क्रोध की दवा	: सुश्री चाँदनी मेहता	8
माँ की शिक्षा	: श्री आनन्दराज तलेसरा	12
पूज्य हीरा गुरु चरणों में	: श्री जवाहरलाल करनावट	17
सवैया	: श्री हीरालाल जैन	17
लोंकाशाह	: श्री दिलीप धींग	28
माटी है पीपाड़ की चन्दन	: श्री मीठालाल 'मधुर'	45
फुर्सत का उपयोग	: श्री दिलीप धींग	48

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	49
समाचार-संकलन	: संकलित	50
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	66
बधाई	: संकलित	66
श्रद्धांजलि	: संकलित	67
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	70

विवेक

डॉ. धर्मचन्द जैन

विवेक मानव की वह प्रज्ञा है जो उसे असत्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करती है। विवेक की निधि से सम्पन्न मानव अनेक संकटों से सहज ही पार पा लेता है। विवेक ही मानव की शोभा है, उसके अभाव में उसकी वृत्तियाँ पशुतुल्य या उससे भी घटिया हो सकती हैं।

'विवेक' से तात्पर्य है-सत् एवं असत् में भेद ज्ञान। क्या सही है और क्या गलत, क्या सम्यक् है और क्या मिथ्या, क्या उपादेय है और क्या अनुपादेय, क्या हितकर है और क्या अहितकर- इनका वास्तविक भेदक बोध ही विवेक है। विवेक के अभाव में मानव का जीवन दिशाहीन एवं नियन्त्रणविहीन होता है। विवेक एक प्रकार का सम्यग्ज्ञान है जो श्रुतज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। मानव की वृत्तियों, मनोभावों तथा क्रियाओं पर विवेक का नियन्त्रण यदि हो तो यह जीवन सुखी, शान्त एवं सफल हो सकता है, किन्तु विवेक न हो तो वह सभी ओर से पतनोन्मुख हो जाता है। कहा भी है- 'अविवेकः परमापदां पदम्' अर्थात् अविवेक आपत्तियों का परम स्थान है। विवेक से भ्रष्ट व्यक्तियों का एक प्रकार से नहीं अनेक प्रकार से पतन होता है-

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।

विवेक से भ्रष्ट हुए व्यक्तियों का पतन सैकड़ों द्वारों से होता है। इसलिए जीवन में विवेक आवश्यक है। विवेक को अंग्रेजी में Rationality कहा जा सकता है। यह Rationality मनुष्य की Emotionality (मनोभाव) पर नियन्त्रण रखती है। मनुष्य के मनोभाव कभी बुरे भी होते हैं तो कभी अच्छे भी। हिंसा, द्वेष, ईर्ष्या, आतंक, भय, निराशा, ताड़ना, तृष्णा आदि के मनोभाव जहाँ मानव को पतन के मार्ग पर ले जाते हैं वहाँ करुणा, प्रेम, दया, मैत्री, निर्भयता, उत्साह, संतोष आदि के मनोभाव उसे उत्थान के मार्ग पर ले जाते हैं। विवेक ही मनोभावों का नियन्ता है। जो व्यक्ति मनोभावों में बह जाता है तथा विवेक की लगाम से विहीन हो जाता है, उसका जीवन पतन के किस गह्वर में गिरेगा, कहा नहीं जा सकता। विवेकशील मानव काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि पर भी नियन्त्रण करने में समर्थ होता है। बिना लगाम के यदि कोई वासना के प्रवाह में बहता है तो वह न अपना हित करता है और न किसी दूसरे का। वह कदाचित् आत्म-भर्त्सना का भी शिकार बन सकता है तथा

समाज में भी उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। विवेक के लिए हंस का उदाहरण दिया जाता है कि हंस दूध एवं पानी में से दूध को ग्रहण कर लेता है तथा उसमें मिश्रित जल को छोड़ देता है- **हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्राः वर्जयत्यपः।**

अपने मनोभावों, प्रवृत्तियों एवं क्रियाओं का सम्यक् मूल्यांकन करना अत्यन्त कठिन है, किन्तु विवेकशील व्यक्ति ऐसा करने में समर्थ होता है। वह बाह्य कार्यों एवं प्रवृत्तियों में भी सत्-असत् का भेद करने में समर्थ होता है तथा स्वयं के लिए उपादेय-अनुपादेय का भी निर्णय करने में समर्थ होता है। सम्भवतः ऐसे विवेकशील साधक को ही आचारांग सूत्र में मेधावी कहा गया है। वह सत्यनिष्ठ होता है। कहा है-

सच्चंमि धितिं कुव्वह। एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसेति।-आचारांग सूत्र 1.3.2

तुम सत्य में धृति करो। सत्य में स्थिर रहने वाला मेधावी समस्त पापकर्मों का क्षय कर देता है। मेधावी पुरुष काम-वासना पर विजय प्राप्त कर लेता है- **मेहावी मारं तरइ।**

बिना विचारे कार्य करना अविवेक पूर्ण कृत्य होता है तथा सोच-विचार कर सम्यक्-असम्यक् का भेद कर लेना विवेक है। अविवेक को सामायिक के ३२ दोषों के अन्तर्गत मन के १० दोषों में स्थान दिया गया है। उसका आशय यही है कि सामायिक विवेकपूर्वक करनी चाहिए। सामायिक में सावद्य एवं असावद्य क्रियाओं का भेद करते हुए अपना ध्यान समभाव की साधना में लगाना चाहिए।

विवेक के कई रूप हो सकते हैं। विवेक स्वयं तो ज्ञानात्मक है जो आत्मा का गुण है, किन्तु उसका प्रयोग कभी सत् असत् को जानने में होता है तो कभी क्रिया को करने में भी विवेक की प्रवृत्ति देखी जाती है। क्रिया संबंधी विवेक को जैनागमों में 'यतना' कहा है।

प्रत्येक क्रिया में विवेकशीलता या यतना रखी जावे तो पापकर्म का बंधन नहीं होता। आगम में कहा गया है-यतना से चलने, खड़े रहने, बैठने, शयन करने, भोजन करने, बोलने से पापकर्म का बंध नहीं होता है-

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई।।-दशवै. 4.8

वाणी में विवेक हो तो वह कलह का कारण नहीं बनती है। क्या, बोलना, क्या नहीं बोलना, कैसे बोलना, कैसे नहीं बोलना इसका विवेक आवश्यक है। सूत्रकृतांग में कहा है- **अणुचिंतिय वियागरे** (सूत्रकृतांग 1.9.25)

साधक की प्रत्येक क्रिया विवेकपूर्ण होती है। जहाँ विवेक रहता है वहाँ प्रमत्तता हावी नहीं होती। अविवेकी में सभी दोषों के आने की संभावना रहती है। प्रत्येक क्रिया को सजगतापूर्वक करने के लिए विवेक का होना आवश्यक है। संस्कृत-साहित्य में भी कहा गया है-

सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतं।
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्।।

भलीभांति सोचकर जो कहा जाता है तथा सोच-विचार कर जो किया जाता है वह दीर्घकाल में भी विकार को प्राप्त नहीं होता। जो बिना विचारे प्रवृत्ति करते हैं वह अज्ञानमूलक होती है। जो विचार करके कार्य करते हैं वे कुशल होते हैं- **परीक्ष्यकारिणो हि कुशला भवन्ति।**

सांख्यदर्शन में प्रकृति एवं पुरुष के भेदज्ञान को विवेकख्याति कहा गया है। जैन दर्शन की दृष्टि से कहें शरीर एवं आत्मा में भेद का ज्ञान कर लेना भी विवेक है। विवेक एक ऐसी आन्तरिक योग्यता है जो मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर, पाप से धर्म की ओर, विनाशी से अविनश्वर की ओर ले जाती है।

विवेक की प्राप्ति बहुत कठिन है। उत्तराध्ययन सूत्र में निगदित है-

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी, अप्पाणुरक्खी चरमप्पमत्तो।।-उत्तरा. 4.10

विवेक की प्राप्ति शीघ्र नहीं होती, अतः कामभोगों को छोड़कर सम्यक् प्रकार से उद्यत होकर, लोक को समभाव से जानो तथा आत्मा की रक्षा करते हुए प्रमादरहित होकर विचरण करो।

जब चिंता, ईर्ष्या, द्वेष, भोगासक्ति आदि से चित्त ग्रस्त होता है तो उसमें विवेक प्रकट नहीं हो पाता। शान्त चित्त में विवेक का प्रकटीकरण होता है तथा सजगता या अप्रमत्तता में वह बना रहता है। प्रमत्तता का प्रवेश होने के साथ ही विवेक का प्रकाश धूमिल हो जाता है।

युवावय में व्यक्ति में जोश होता है, किन्तु विवेक की कमी रहती है। विवेक के अभाव में जोश अनर्थ का कारण बनता है। मनोभावों के आवेश में व्यक्ति अनुचित कार्यों में भी प्रवृत्त हो जाता है। विवेक का दीप ही उसे प्रकाश प्रदान करता है। विवेक है तो निर्णयात्मक शक्ति का भी विकास सम्भव है तथा प्रत्येक क्रिया भी सावधानी के साथ सम्पन्न होती है, जो व्यक्ति के वास्तविक विकास में उपयोगी है। ■

पूज्य हीरा–गुरु गुणाष्टकम्

मिथ्यात्व–पङ्क–कलुषीकृत–मानसान् नॄन्,
धर्मोपदेशकतकेन विशुद्धयन्तम्।
सन्दर्श्य संयमपथं सुगतिं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।१।।

मिथ्यात्वरूपी कीचड़ से मलिन, मानवरूपी सरोवर को धर्मरूपी फिटकरी से विशुद्धि प्रदान करने वाले, संयम का मार्ग बता कर सद्गति की ओर ले जाने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य–प्रति भाव–पूर्वक प्रणाम करता हूँ।

जित्वेन्द्रियाणि सकलानि मनो निवेश्य,
आत्मन्यथो यमपरं नियमैश्च युक्तं।
नित्यं च धर्मकरणे समयं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।२।।

जिन्होंने सब इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, मन को आत्मा में लगा दिया है, जो अहिंसा, सत्य आदि धर्मों व स्वाध्याय, संतोष आदि नियमों से युक्त हैं और निरन्तर धर्म–कार्यों एवं धर्माचरण में समय को व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे श्री हीराचन्द्रगुरुवर को निरन्तर श्रद्धा–पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

दुर्वादिमत्त–गज–गण्ड–विभेदनार्थं,
पञ्चाननं जिनवरागमतत्त्वविज्ञं।
रत्नत्रये नियमितार्पितचित्तवृत्तिं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।३।।

दुर्वादी रूपी मदोन्मत्त हाथियों के गण्डस्थल को भेदने में जो सिंह के समान हैं, जिनेश्वर भगवान के कहे गये आगम–तत्त्वों को अच्छी तरह जानने वाले, रत्नत्रय की आराधना में अपनी चित्तवृत्ति को नियमित रूप से समर्पित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को भक्तिपूर्वक नित्यप्रति नमन करता हूँ।

शास्त्राण्यधीत्य सततं श्रुतपारदृक्त्वं,
तत्त्वार्थवित्त्वमधिगम्य चकासतं शम्।
सद्देशनाविहितधर्मविभावनं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।४।।

निरन्तर शास्त्रों का गहराई से अध्ययन-स्वाध्याय करके श्रुत के रहस्य रूपी अतुल गहराइयों को देखने वाले, तत्त्व के गूढ़ अर्थ को जानकर-समझ कर उससे प्राप्त ज्ञान के प्रकाश में सद्देशना युक्त धर्म की प्रभावना करने वाले कल्याणकारक श्री हीराचन्द्र गुरुवर को सदा भाव- पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

दृष्ट्या जनान् करुणया परिनन्दयन्तं,
वाण्या सुधामधुरया परितोषयन्तम्।
भावं च धर्मचरणे परिवर्धयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।५।।

अपनी करुणामयी दृष्टि द्वारा लोगों को आनन्द प्रदान करने वाले, अमृत-तुल्य मधुर वाणी से जन समुदाय को पूर्ण संतुष्ट करने वाले और धर्माचरण में लोगों के भावों को निरन्तर अभिवर्द्धित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य भाव-युक्त नमन करता हूँ।

योगत्रयं शुभतरं समितीश्च पञ्च,
क्षान्त्यादि धर्मनिचयं सुमहाव्रतं च।
यः सेवते प्रशमभावरतोऽनिशं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।६।।

जो प्रतिदिन मन, वचन और काया के अत्यंत ही शुभ योगों का, पांचों समितियों का, क्षान्ति आदि दस प्रकार के साधु धर्म का और पांचों महाव्रतों का प्रशम-भाव में रत रह कर, अप्रमत्त भाव से हमेशा आचरण एवं पालन करते हैं, उन श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदैव भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

मांसाशनादि-सकल-व्यसनेषु सक्तान्,
सम्यक् प्रबोध्य समयं सुपथे प्रवृत्तात्।
दृष्ट्वानिशं मनसि मोदवहं महान्तम्,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।७।।

मांस-भक्षण, मदिरा-पान आदि सभी सप्त कुव्यसनों में लिप्त आसक्त जनों को आप द्वारा सम्यक् रीति से (अच्छी तरह से) धर्म का स्वरूप समझा कर और सिद्धान्त व सन्मार्ग में प्रवृत्त हुआ देखकर जो मन में अत्यन्त आनन्दित होते हैं, ऐसे महान् उपकारी श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

दुष्प्रापसिद्धगतिमार्गविबोधनार्थं,
जैनागमादधिगताखिलतत्त्वसारम्।
संसेव्य संयमधनं कृतनिर्जरं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।८।।

अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होने वाले, ऐसे सिद्ध गति के मार्ग को जानने के लिए जिन्होंने जिनेश्वर भगवान् द्वारा प्रणीत आगमों में निहित तत्त्वों के सार को सम्पूर्ण रूप से जान लिया और जो विशुद्ध संयम की आराधना कर कर्मों को निर्जरित कर रहे हैं, उन तृतीय पद के धारक श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

माहात्म्य- स्तोत्राष्टकमिदं पुण्यं, प्रातःसायं पठन् नरः।
संप्राप्नोति परां शान्तिं, प्रशान्तमनसा धिया।।

इस पुण्य-कारक स्तोत्र को जो मनुष्य प्रातःकाल एवं सायंकाल शांतमन एवं प्रसन्न बुद्धि से पठन करता है, उसको परम शांति की प्राप्ति होती है।

रचयिता- पं. लक्ष्मण वासुदेव मांडवगणे, जलगांव

क्रोध की दवा

एक स्त्री ने अपनी पड़ोसिन से कहा- ''बहिन! मेरे स्वामी का मिजाज बहुत चिड़चिड़ा है। वे मुझसे लड़ते ही रहते हैं और इस तरह हमारी बनी बनाई रसोई बेकार चली जाती है।'' पड़ोसिन ने कहा- ''अरे इसमें कौन--सी बात है? मेरे पास एक ऐसी अचूक दवा है कि जब तुम्हारे पति तुमसे लड़ें तब तुम दवा मुँह में भर लिया करो, बस वे चुप हो जायेंगे।''

पड़ोसिन ने शीशी भरकर दवा दे दी। उस स्त्री ने दवा की दो-तीन बार पति के क्रोध के समय परीक्षा की। उसे बड़ी सफलता मिली। उसने खुशी-खुशी जाकर पड़ोसिन से कहा- ''बहिन! तुम्हारी दवा तो बड़ी कीमती है। उसमें क्या चीजें पड़ती हैं, बता दो तो मैं भी बना कर रखूं।'' पड़ोसिन ने हंसकर कहा- ''बहिन! शीशी में मधुर जल के सिवा और कुछ भी नहीं था। काम तो तुम्हारे मौन ने किया। मुँह में पानी भरा रहने से तुम बोल नहीं सकी और तुम्हें शान्त पाकर उनका क्रोध जाता रहा।'' ''बस एक मौन सब दुःख हरे, बोले नहीं तो गुस्सा मरे।''

-संकलित : सुश्री चाँदनी मेहता, पीपाड़

अपने कायाकल्प हेतु प्रभु से प्रार्थना

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

यह प्रार्थना नहीं अन्तर्मन की भावना है, जिसके बार-बार पठन एवं चिन्तन से जीवन में बदलाव सम्भव है। अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर साधकों के लिए इस प्रकार के प्रयोग किया करते थे। अग्रांकित गद्यमयी प्रार्थना इसका एक उदाहरण है। इस प्रार्थना का प्रातःकाल प्रतिदिन पठन करने से मनुष्य के विचारों एवं व्यक्तित्व में निश्चित ही बदलाव का अनुभव होगा। -सम्पादक

मंगलमय, सत्चिद् आनन्द स्वरूप परमात्मा के लिये नमस्कार है। स्वपुरुषार्थ से राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने वाले महापुरुषों की विजय हो।

हे प्रभो! मैं महापुरुषों के समान जीवन कब व्यतीत कर सकूँगा? भगवन्! मैं तो खाने-पीने और मौज उड़ाने में, धन-वैभव की वृद्धि करने और कीर्ति कमाने में और भी ऐसी ही न जाने कितनी बातों में जीवन खो रहा हूँ। इस जंजाल में फंसकर मैं कभी थोड़ी देर के लिए भी शान्तचित्त से विचार नहीं करता कि मेरा आत्म-हित किस बात में है। यह कितने अनर्थ की बात है? भविष्य में ऐसा न हो इसलिए नित्य प्रति मैं अग्रांकित प्रार्थना अवश्य किया करूँगा।

प्रार्थना मेरी प्रभु से

हे प्रभो! संसार के समस्त जीवों के प्रति मेरे हृदय में प्रेम भाव हो। किसी भी प्राणी के प्रति मेरे मन में वैर-विरोध न रहे। वे भी मेरे ही जैसी आत्मा हैं।

हे प्रभो! जो गुणवान् अपने गुणों की वृद्धि में लगे हुये हैं, उन्हें देखकर मेरा हृदय हर्ष से भर जाए और उन्हीं के समान गुणवान् होने की मेरी भी इच्छा रहे।

हे प्रभो! जो रोग-शोक और भूख प्यास से पीड़ित हैं, उन्हें देखकर मेरा हृदय दया से भर जाए और उनकी सहायता के लिये मैं सदा तैयार रहूँ।

हे प्रभो! जो कुपथगामी हो और अपने हितेच्छु का उपदेश भी न मानता हो, उसके प्रति मैं समभाव में रहूँ। उस पर क्रोध या घृणा करके मैं अपनी आत्मा को व्यर्थ ही मलिन न करूँ।

हे प्रभो! मेरा मन सुख में लीन न हो, दुःख में भयभीत न हो, इच्छित वस्तु मिलने पर मुझे अभिमान न हो तथा न मिलने पर खेद न

हो। सुख और दुःख दोनों ही मेरे लिए समान हों।

हे प्रभो! मुझे अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त हो, जिससे मैं चाहे जैसी भयंकर गर्मी, सर्दी और धूप सहन कर सकूँ। मनोनुकूल स्पर्श में मुझे ममता न हो और कर्कश स्पर्श से रोष या दुःख न हो। मैं रूखा, सूखा और नीरस आहार भी सूखपूर्वक खा सकूँ, स्वादिष्ट भोजन देखकर मेरा मन विचलित न हो। सुगन्धि पर मुझे मोह न हो और भयंकर दुर्गन्ध भी सहन कर सकूँ। मोहक रूप मुझे आकर्षित न कर सके और कुरूपता पर मुझे घृणा न हो। मधुर और प्रशंसा के शब्द मुझे मोहित न कर सकें और कठोर तथा अपमान के शब्द मुझे अखरे नहीं।

हे प्रभो! मेरे हृदय में क्षमा का वास हो, क्रोध का नाश हो, नम्रता का वास हो, अभिमान का नाश हो। सरलता का वास हो, कपट (माया) का नाश हो, संतोष का वास हो, भिखारी वृत्ति (लोभ और तृष्णा) का नाश हो।

हे प्रभो! मुझे ऐसी बुद्धि प्राप्त हो कि जिससे मैं ज्ञान और ज्ञानी की निरन्तर भक्ति कर सकूँ। ज्ञान प्राप्त करने के लिए चाहे जितने भी कष्ट सहन कर सकूँ। ज्ञानदाता को कभी विस्मृत न करूँ और शुद्ध भाषा तथा शुद्ध अर्थ सीख सकूँ।

हे प्रभो! मुझे ऐसी सद्‌बुद्धि प्राप्त हो कि जिससे अहिंसा और तप में दृढ़ श्रद्धा उत्पन्न हो। हिंसा और भोग विलास की भावना उत्पन्न न हो। मुझे यह दृढ़ विश्वास रहे कि उत्तम कर्म का उत्तम फल मिले बिना नहीं रह सकता। किसी प्रकार के प्रलोभन से मेरा मन सत्य और न्याय से विचलित न हो। मेरा मन धर्मात्माओं की प्रशंसा में सदा लगा रहे। धर्ममार्ग से पतित होते हुओं को रोकने की सदैव मेरी इच्छा हो। प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति प्राप्त हो कि जिससे धर्म की महत्ता जगत में प्रकट कर सकूँ।

हे प्रभो! मेरे जीवन के छोटे से छोटे कार्य भी विवेक और सावधानी रहित न हों, जैसे-खाना, पानी पीना, चलना-फिरना, बोलना, किसी वस्तु को उठाना, रखना, निकम्मी वस्तुओं को फेंकना आदि। ये सब काम मैं इस प्रकार कर सकूँ कि जिससे दूसरों को तनिक भी हानि न हो।

हे प्रभो! कुछ न कुछ तप करने की मेरी मनःकामना अवश्य हो। यदि मुझसे उपवास, एकाशन, आयम्बिल आदि न हो सके तो कम

से कम ऊनोदरी व्रत (भूख से १-२ ग्रास कम खाने का नियम) तो मैं अवश्य ही पालन कर सकूँ। भाजन में भोजन को झूठा न डालूँ।

हे प्रभो! मेरे हृदय में सेवाभाव का उदय हो कि जिससे मैं दीन दुःखी, लूले लंगड़े, अंधे अपाहिज और आपत्तिग्रस्त मनुष्यों के काम आ सकूँ।

हे प्रभो! मुझे प्रातःकाल उठकर आत्मचिन्तन करने का अभ्यास हो, सोने के समय दिन भर के कार्यों पर दृष्टि डाल जाने की आदत पड़े। ताकि मैं अपनी भूलों का संशोधन करके उन्नति कर सकूँ।

हे प्रभो! निरन्तर आपकी सेवाभक्ति करने की मेरी इच्छा हो। दुर्भाग्यवश इतना न कर सकूँ तो कम से कम ५ मिनिट तो आपके पवित्र नाम का स्मरण अवश्य कर लिया करूँ।

हे प्रभो! मुझे ऐसी स्मरणशक्ति प्राप्त हो कि जिससे स्वीकार किए हुए नियमों को कभी न भूलूँ। मुझे ऐसी शक्ति एवं दृढ़ता प्राप्त हो कि चाहे जैसी कठिन परिस्थितियों में भी अपनी प्रतिज्ञाओं (व्रतों) का पालन कर सकूँ।

हे प्रभो! मैं भव्य प्रतिज्ञा सदैव जितने समय गा सकूँ, उतने समय अवश्य गाऊँ। दूसरों की भी उसमें रुचि उत्पन्न करूँ। अहो! यह प्रतिज्ञा कितनी महान है। एक बार अब भी तो गा लूँ-

धुन आत्म विकास के साधन की,
सब भूल रहे दिन रैन लगी।
भय क्या, यदि विघ्न हजार पड़े,
न रुके, बस लक्ष्य की ओर बढ़े।
ध्रुव ध्येय में ध्यान लगा जिनका।
पथ कंटकहीन सदा उनका।
धुन आत्मविकास के साधन की।
सब भूल रहे दिन रैन लगी।
धुन आत्मविकास के साधन की।
सब भूल रहे दिन रैन लगी।

हे प्रभो! आपकी प्रचारित पवित्र भावनाओं को मैं कभी न भूलूँ। मुझे जगत भर में उनके विस्तार करने का आत्मबल प्राप्त हो।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

क्षमा सभी को मैं करूँ, मुझे करें सब कोय।
सबसे मेरी मित्रता, वैर कहाँ से होय?
शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरताः भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।
सब जगत का कल्याण हो, परहित रत हों लोग।
सब दोषों का नाश हो, सब भोगें सुख भोग।।
ईति भीति व्यापे नहीं, वृष्टि समय पर होय।
धर्मनिष्ठ राजा रहे, न्याय न बैठे खोय।।
जीवन में सुखशांति हो, रोग मरी निर्मूल।
फैल अहिंसा जगत् में, करे शूल को फूल।।

हे प्रभो! आपने जो अहिंसा मार्ग दिखलाया है, उस पर चलने की शक्ति प्रदान करें। निरन्तर सत्य भाषण करने की शक्ति प्रदान करें। किसी भी दशा में अन्य की वस्तु लेने की इच्छा न हो। शुद्ध ब्रह्मचर्य-पालन की शक्ति प्रदान करें। मुझसे यह न हो सके, तो पर-स्त्री की ओर कुदृष्टि तो न जाए।

हे प्रभो! मैं इस माल मिलकत को भार रूप एक जंजाल मात्र समझूँ। मुझे इस सबका त्याग करके त्याग पथ पर बढ़ने की शक्ति प्राप्त हो।

माँ की शिक्षा

श्री आनन्दराज धीसूलाल तलेसरा

अंग्रेजी के साहित्यकार डेनियल बचपन में बहुत गरीब थे। वे जिस स्कूल में पढ़ते थे, उसमें एक दिन गरीब छात्रों को सहायता स्वरूप कॉपी-किताब जैसी कुछ चीजें बांटी जा रही थीं। स्कूल से मिलने वाली सहायता का सामान उन्होंने भी ले लिया। जब वे घर आए तो उनके पास नई कॉपियाँ और किताबें देख कर उनकी माँ ने पूछा कि उन्हें वे कहाँ से प्राप्त हुई। जब माँ को पूरी बात का पता चला, तो उन्होंने डेनियल से कहा- ''जाओ, इन्हें वापस कर आओ। यह सहायता उनके लिए है जो बिल्कुल बेसहारा हैं। मैं तुम्हारी पुस्तकों और फीस के लिए मेहनत मजदूरी कर सकती हूँ। हमें उनका हक मारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो असहाय हैं।'' डेनियल को सहायता के रूप में मिली चीजें स्कूल में जमा कर देनी पड़ी। इस घटना ने डेनियल को खुद ही मेहनत कर अपनी जरूरतें पूरी करने का सबक सिखाया। बच्चों को नैतिकता और स्वाभिमान की जो शिक्षा स्कूलों में किताबों के माध्यम से दी जाती है,उससे कहीं गहरी छाप उस शिक्षा की होती है, जो उनके अपने घरों में माँ-बाप के व्यवहार से मिलती है।*-गोरेगांव, मुम्बई(महा.)*

साधक के लिए आवश्यक है इच्छा जय

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आवश्यकता एवं इच्छा में भेद है। जीवन संचालन के लिए जिन साधनों की अपरिहार्यता है वे आवश्यकता का निर्धारण करते हैं, किन्तु इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती, वे मन में उत्पन्न होकर विषयों की ओर दौड़ती हैं। साधक को इच्छाओं को परिमित या नियन्त्रित कर अपने जीवन को शान्त एवं सुखी बना लेना चाहिए। इसी प्रकार का संदेश पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रस्तुत प्रवचन से प्राप्त होता है। यह प्रवचन आचार्यप्रवर ने 20 सितम्बर 2003 को इचलकरंजी के स्थानक भवन में फरमाया था, जिसका आशुलेखन श्री नौरतनजी मेहता ने किया है। -सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी जीवन का निर्माण करने के लिए प्रत्येक साधक को दो अनुपम सूत्र बता रही है-**1.संयम और 2.तप।**

साधक! तू सिद्धि की ओर आगे बढ़ना चाहता है, परमात्म पद का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, अटकने और भटकने से मुक्ति मिलाना चाहता है तो संयम और तप की आराधना कर। जितना-जितना संयम और तप तेरे जीवन में आयेगा उतने-उतने तेरे बंधन हटते जायेंगे। संयम वीतराग वाणी का सार तत्त्व है और तप उसको पुष्ट करता है। संयम से संवर होता है, जिससे आने वाले कर्मों का निरोध हो जाता है। आने वाले कर्मों को रोकने के पश्चात् पूर्व के संचित कर्मों को तप से समाप्त किया जा सकता है।

भवकोड़ि संचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

हे साधक! तप की साधना के साथ अपनी आत्मा को भावित करते हुए साधना-पथ पर आगे बढ़। संयम भी आस्रव का निरोध करता है, तप भी निरोध करता है। इसी निरोध को लक्ष्य में लेकर शास्त्रकारों ने बावन अनाचारों में एक अनाचार बताया-'किमिच्छिए'। किसी घर में दाता के यहाँ साधु से पूछा जाता है- आपको क्या चाहिये? जहाँ ऐसा पूछा जाता है वहाँ से साधक अशन-पान-खादिम-स्वादिम ग्रहण न करे। क्यों ग्रहण नहीं करे? क्योंकि साधक तपस्वी जीवन वाला है। आचार्य उमास्वाति ने कहा-'इच्छानिरोधस्तपः'। इच्छा के अनुसार चलना बन्धन में जाना है। इच्छा का निरोध तप है।

तप की बहुत बड़ी महिमा है। आवश्यकता और इच्छा दो अलग-अलग वस्तुएँ हैं। आवश्यकता हर व्यक्ति की पूरी हो सकती है।

कहते हैं-मानव जब पैदा हुआ तब प्रकृति से उसकी मुट्ठियाँ बन्द थी। इन्सान जन्म लेता है तो उसकी मुट्ठियाँ बंद होती हैं। इसका मतलब क्या? व्यक्ति अपना भाग्य लेकर आया है। आने वाला कह रहा है कि मेरा भाग्य मेरे साथ है। बच्चे का भाग्य है कि उसे माता का दूध पीने को मिलता है। माँ की तरह गाय हो- भैंस हो उसके बछड़ों को दूध जन्म के साथ ही प्राप्त होने लगता है। यह तो आदमी की बेईमानी है, अन्याय है, अनीति है जो बछड़े को पेट भर दूध पीने के पूर्व ही उसे गाय या भैंस से दूर कर सारा दूध निकाल लेता है। उदरपूर्ति पहले है, बाद में मानव उसका उपयोग करे, किन्तु बछड़े को भूखा रखकर तथा इंजेक्शन लगाकर गाय-भैंस का अधिक दूध निकालना किसी भी तरह से उचित नहीं। प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार बछड़े के जब दांत नहीं होते तो माँ से दूध मिल जाता है, किन्तु जब दांत आ जाते हैं तो चारा या अन्न मिल जाता है। जब दूध की जरूरत थी तो दूध मिल गया, अन्न की जरूरत होने पर अन्न मिल गया, फिर भी आदमी इतनी चिन्ता क्यों करता है?

तीन दिन पहले एक भाई आया। कहने लगा- जब तक जवानी थी तब तक मेहनत कर ली, कमा लिया। जो कमाया बच्चे-बच्चियों की शादी में पूरा हो गया, अब संग्रह कुछ नहीं है। बस यही चिंता है, अब क्या होगा? लड़के बड़े हो गये। जिनके यहाँ करोड़ों का संग्रह है वे भी चिंताग्रस्त हैं।

पूर्वकृत पुण्य जब चुक जाता है तो व्यक्ति के बुरे दिन भी आते हैं। यदि पुण्य शेष हैं तो बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन भी आते हैं। जो पूर्वभव में दान पुण्य करता है, उसे इस जन्म में विपरीत परिस्थितियों में भी मिलता रहता है। धन्ना सेठ एकदम निर्धन था, किन्तु योग ऐसा बनता रहा कि एक के पश्चात् एक चरू मिलता गया और धन्ना 'सेठ' बन गया।

जो देकर आया उसे मिलेगा। मैं अनाचार की बात कह रहा था-"जहाँ यह कहा जाता है कि आपको क्या चाहिये? वहाँ साधक सावधान हो जावे। जहाँ इच्छा है, वह साधक नहीं। इच्छा के अनुसार लेने वाला मूर्च्छा वाला होता है। आवश्यकता अलग बात है, इच्छा अलग बात है। आवश्यकता का छोर होता है, इच्छा का छोर नहीं। खाने वाले को अन्न चाहिये, उसकी पूर्ति हो सकती है। चार रोटी, सब्जी सबको

मिल सकती है। कोई भूखा रह जाय, ऐसा नहीं है। मुझे तो यह चाहिये, वह चाहिये ये सब इच्छाएँ हैं। सर्दी में गर्मागर्म, गर्मी में ठण्डी-ठण्डी चाहिये। मुझे मिठाई चाहिये, नमकीन चाहिये। पापड़ नहीं आए तो भाणा नहीं उठे। ये सब इच्छाएँ हैं।

तन ढ़कने को कपड़ा चाहिये, यह आवश्यकता है। पर ऐसा चाहिये, टेरीलीन चाहिये, रेशमी चाहिये, कड़का-कड़क चाहिये ये इच्छाएँ हैं। पहले की बहिनें बनारसी साड़ी पहनती, जिसमें सोने-चांदी के तार लगे रहते। आज न जाने किन-किन डिजाइनों की, किन-किन नामों की साड़ियाँ चाहिये। पहले ढ़ाका की मलमल पहनी जाती, आज न जाने क्या-क्या मांग होती है। जमाना बदला तो वस्त्रों में परिवर्तन आ गया। पहले औरतें सिर ढ़क कर रखती, आदमी भी नंगे सिर नहीं रहते। उगाड़े माथे का अपशकुन होता। आज स्थिति भिन्न है। आज तो पागड़ी गई अगाड़ी, साफो गयो फाट, दो पईसा री टोपी आवे महिना चाले आठ। अब तो टोपी भी उड़ गई।

तन ढ़कने के लिए वस्त्र की आवश्यकता है लेकिन ऐसा-वैसा चाहिये, अमुक डिजायन का चाहिये, अमुक ब्राण्ड का चाहिये यह इच्छा है। आज तो वस्त्र अहिंसित हैं या हिंसित, इसका भी ध्यान नहीं। सामाजिक-धार्मिक स्थलों पर कैसे वस्त्र पहनना इसका उपयोग नहीं। चमड़े के पर्स रखे जाते हैं, यह आवश्यकता नहीं, इच्छा है। घर चलाने के लिए, सेवा करने के लिए, घरवालों को संभालने के लिए नारी चाहिये पर आज प्रायः चमड़ी-दमड़ी या रंग-रूप देखते हैं। घर चलाने के लिए सभ्य है, संस्कृति जानने वाली है, संस्कारशीला है, धार्मिक वृत्ति वाली है यह नहीं देखते हैं। आज शान-शौकत, रंग-रूप देखकर संबंध करते हैं इसीलिये आज तलाक बढ़ रहे हैं, लड़की को पीहर नहीं भेजा जाता। यह इच्छाओं के कारण से है।

साधक के लिए इच्छा त्याज्य है। वह यदि इच्छा के अनुसार चलेगा तो साधना नहीं कर सकेगा। क्योंकि इच्छाओं का न ओर है न छोर। पेट भरा जा सकता है, पर इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो सकती।

एक नरेश की बात सुनी। वह जो भी नई चीज देखता उस पर आसक्त हो जाता। आसक्ति की तीव्रता से वह रोग ग्रसित होकर सड़-सड़ कर मरा। उसे आवश्यकता की नहीं, इच्छाओं की पूर्ति करनी थी। इच्छा की पूर्ति किसी की हुई नहीं, होगी भी नहीं। साधक के लिए इच्छा

पर नियन्त्रण करना आवश्यक बताया है। यह इच्छा ही परिग्रह है, मूर्च्छा है, बंधन में डालने वाली है। साधु के लिये यह अनाचार है, श्रावक के लिए भी छोड़ने लायक है, नियन्त्रण करने लायक है।

आप सुखी जीवन जीना चाहते हैं तो इच्छाओं पर नियन्त्रण करें। किसी के पास करोड़ रुपये हो गये तो उसे यदि कहा जाय कि तुम धंधे से निवृत्ति ले लो, तो जवाब मिलता है- बाबजी! अभी तक संभालना पड़ता है। भाई! जब बेटे-पोते संभालने वाले हैं तो तुम्हारी क्या जरूरत? लेकिन इच्छा पर नियन्त्रण नहीं। छोड़ने वालों ने जिस दिन समझ में आ गया, छोड़ दिया। भृगु पुरोहित के बच्चों की बात आपने सुन रखी है। आज तो ट्रस्ट बना दिया उसमें भी नाम की चाहना है। सांप केंचुली छोड़ता है तो पीछे मुड़कर नहीं देखता। राजपुरुष आये, गाड़ी भर-भर कर ले गये, पर पुरोहित पुत्रों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। क्योंकि उन्होंने इच्छाओं को जीत लिया।

साधक के लिए मूर्च्छा छोड़ने की बात है। साधक यदि गृहस्थ के घर यह पूछे कि इसमें क्या है, उसमें क्या है तो समझना चाहिये अभी लालीबाई वश में नहीं है। इच्छा पर नियन्त्रण का एक तरीका बताया जाता है-मिठाई की मन में आए तो नीम खिलाओं। घेवर मांगे तो गोबर दो।

एक भाई जिसे मन-मुताबिक नहीं मिलता तो वह पत्नी से कहता-"देख! मैं महाराज बन जाऊँगा।" वह रोज-रोज यह बात कहता। एक दिन कबीरदासजी घर पर आये। पूछा- क्या बात है? बहिन बोली- ए रोज-रोज नाराज होकर कहते हैं कि मैं बाबजी बण जाऊँला, घर से चलियो जाऊँला। कबीरजी बोले- तूं चिंता मत कर, यह कहीं जाने वाला नहीं है। जावे जको केवे कोनी, केवे जको जावे कोनी। जाऊँ-जाऊँ कहे तो कह देना, काले जातां आज जाओ। बहिन ने ऐसा कह दिया तो उसको चुभने लगी। वह घर से चला गया और कबीरदासजी से कहा- 'मुझे बाबजी बना दो।' उसे बाबजी बना दिया। पूछा- तेरे मन में क्या इच्छा है? वह बोला- घेवर खाना है। उसे गाय का गोबर लाकर दिया। वह ऐसा देखकर बोला- मैं तो घर ही जाऊँगा। वह घर पर आ गया तो घरवाली बोली- पाछा कींकर आया? तात्पर्य यही है कि साधना करने वालों को मन के मुताबिक के बजाय आवश्यकता पर चलना चाहिये। आवश्यकता पर चले तो संत, संत है। आप भी इच्छाओं का शमन कर साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। ■

पूज्यवर हीरा गुरु-चरणों में

(तर्ज-सेवो सिद्ध सदा जयकार)

पूज्यवर हीरा गुरु चरणों में, करते वन्दन बारम्बार।
वन्दन बारम्बार, इनकी जय बोलो नर नार।।
पीपाड़ शहर में जन्म लिया है, गांधी कुल शृंगार।
मोहिनी माँ के लाल दुलारे, जन-जन के हियहार।।
हस्ती गुरुवर के पट्टधारी, हीरा गुरु गुणधार।
अष्ट सम्पदा युक्त विराजे, भवजल तारणहार।।
आगम ज्ञानक्रिया भण्डारी, आचारज अणगार।,
गौरवशाली गुरुवरजी का, दीप रहा दीदार।।
पंचाचारी श्री संघस्वामी, रत्नसंघ सरदार।
भजलें हम सब भव्य भाव से, त्रिभुवन पालनहार।।

-जवाहरलाल करनावट, 40-Mookathal Street, Prestige Place, Purus Walkm, B Block, IInd Floor, Chennai

सवैया

दीनबन्धु दीनानाथ, महाव्रत पंचाचार,
समिति गुप्ति धार, करुणा निधान हो।
मोहिनी के लाल प्यारे, पिता मोतीलाल पाये,
जन्म है पीपाड़ लिया, गांधी कुल उजियारा है।
संयम की करणी करे, किरिया में आगे रहे,
तपधारी, ब्रह्मचारी, बड़े विनयवान हैं।।
प्रवचन की शैली न्यारी, सिंहनाद करे भारी,
संयम में दृढ़ता धारी, संघ के सिरताज हैं।
काम-क्रोध, मोह-लोभ, संसार से छोड्यो हेत,
हस्ती गुरु सुं नातो जोड़ आत्मा को तारी है।
आपको जो करे ध्यान, दु:ख उससे करे प्रयाण,
कहे भक्त 'हीरालाल' वन्दना हमारी है।।

-हीरालाल जैन, पत्रकार, सवाईमाधोपुर

प्रवचन

स्वाध्याय और साध्वाचार

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

महावीर भवन, इचलकरंजी में 21 सितम्बर 2003 को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा. के आज्ञानुवर्ती सन्त महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाया गया प्रस्तुत प्रवचन दो बिन्दुओं पर केन्द्रित है- स्वाध्याय और साध्वाचार। आत्म-दर्शन एवं आत्म-परिष्कार में स्वाध्याय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इस पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री ने दशवैकालिक सूत्र में वर्णित साध्वाचार के कतिपय बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया है। मुनिश्री का प्रवचन सहज, सरल एवं सुग्राह्य होने के साथ प्रभावी भी है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

चैतन्य की चेतना को जागृत करने वाली आगमवाणी का स्वाध्याय दशवैकालिक सूत्र के माध्यम से आपके सामने किया जा रहा है। स्वाध्याय वह नन्दनवन है जो तृष्णा के ताप से संतप्त प्राणी को संतोष की श्वास प्रदान करता है। स्वाध्याय कषाय से कलुषित बने मानव को उपशम भाव के सूत्र प्रदान कर निष्कलुष बनाता है। स्वाध्याय विषय की आग में झुलसते प्राणी को सदाचार और संयम में स्थिरता प्रदान करता है। स्वाध्याय वह कला है जो दुःख के अन्दर सुख का संवेदन कराती है। स्वाध्याय से प्रतिकूलता में अनुकूलता का सृजन होता है। स्वाध्याय शत्रु के अन्दर मित्रभाव को स्थापित करता है। स्वाध्याय अपने-पराये का भेद भुलाकर अपनत्व का संदेश देने वाला मंत्र है। आगम वाणी का स्वाध्याय आत्मा के लिए औषधि है।

आचार्य भगवन्त (पूज्यश्री हस्तीमल जी महाराज) की भाषा में स्वाध्याय एक दर्पण है जो स्व का निरीक्षण कराता है। वह दूसरों की बजाय अपने दोषों को बताता है, स्वयं का निरीक्षण-परीक्षण कराता है। मूला ने चन्दनबाला के बाल काट दिये, हाथ में हथकड़ी डाल दी और उसे भौंरे में बन्द कर दिया। चन्दनबाला का उस समय भी स्वाध्याय के बल से चिन्तन चल रहा था कि यह सब उसके अपने कर्मों का दोष है। दूसरा कोई दुःख देने में समर्थ नहीं है।

जिसमें अज्ञान का अंधकार है वह दूसरों को दोषी बताता है। उसने मुझे मारा, उसने मुझे हैरान किया, वह मुझे परेशान कर रहा है, वह मुझे दुःख दे रहा है। शास्त्र कह रहा है जिसे स्वाध्याय का ज्ञान है

तो वह दूसरों को दोष देने के बजाय अपने किए कर्मों का चिन्तन करेगा। स्वाध्याय का जिसमें बल होगा वह दूसरों को नहीं, अपने-आपको देखता है। दूसरों को देखने वाला अपनी समाधि घटाता है।

आप दूसरों को देखते हैं इसलिये समाधि नहीं आती। जब तक अज्ञान है तब तक स्व का अध्ययन नहीं आता। एक दर्पण होता है, एक दूरबीन होती है। दूरबीन दूर की चीज देखती है, जबकि दर्पण अपने सामने कौन है उसका प्रतिबिंब प्रदर्शित करता है। स्वाध्याय दर्पण है। अपने-आपको देखना स्वाध्याय है।

स्वाध्याय के पाँच भेद हैं- वाचना, पृच्छना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। वाचना रूप स्वाध्याय हेय-ज्ञेय-उपादेय का बोध कराता है। करणीय-अकरणीय, ग्राह्य-अग्राह्य का बोध कराता है। पृच्छना रूप स्वाध्याय मन की जिज्ञासाओं का, शंकाओं का समाधान कराने वाला है। वाचना दी जा रही है और यदि पृच्छना नहीं है तो ज्ञान का जैसा विकास होना चाहिये वह नहीं होता। अधूरा ज्ञान पृच्छना से परिपक्व होता है। पर्यटना द्वारा सीखा ज्ञान स्थिर रखा जाता है। सीखे ज्ञान को बार-बार फेरा जायेगा, गुना जायेगा तो वह ज्ञान स्थिर रहेगा। जब महाराज आते हैं, प्रेरणा करते हैं तो कई भाई-बहिन प्रतिक्रमण सीखते हैं। महाराज हैं तब तक सीखना है। इधर महाराज गये, उधर भूल गये। कल एक भाई आया, कहने लगा- पच्चीस बोल सीखे तो थे। मैंने कहा- "भाई! सीखे हैं तो सुना दो।" किन्तु सुनाये क्या? वह तो भूल गया। बोला-"महाराज! याद नहीं हैं।" याद क्यों नहीं? तो परिवर्तना रूप स्वाध्याय नहीं रहा इसलिये सीखा हुआ ज्ञान विस्मृत हो गया। अनुभवियों ने ठीक ही कहा है-

पान सड़े, घोड़ा अड़े, विद्या विसर जाय।
चूल्हे पर रोटी जले, कहो चेला किण न्याय।।

चार प्रश्न किये जिनका एक समाधान दिया-फेरा नहीं। पान कितने ही अच्छे हैं, सुन्दर हैं, यदि पान की दुकान करने वाला पानों को इधर- उधर नहीं करेगा तो पान सड़ जायेंगे। पान फेरते रहा तो सड़ने से बच जायेंगे। घोड़ा चलने वाला है, सरपट दौड़ लगाता है, हवा से बातें करने वाला है उसे यदि ठाण पर बांधकर रखेंगे तो? ठाण पर बंधा रहा घोड़ा अड़ता है।

ठाण बंधियो घोड़ो बिगड़े, बिगड़े मक्की हांगणी

लाड लडायां छोरो बिगड़े, पीहर बिगड़े कामनी।।

चार चीजें खराब हो जाती हैं, विकार ग्रस्त हो जाती हैं। घोड़े को चलाया नहीं जायेगा तो वह सरपट दौड़ने में काम नहीं आयेगा। ठाण पर बंधा घोड़ा थोड़ा चलेगा, अड़ जायेगा। बिगड़े मक्की हांगणी- एक मक्के में रोग लग जायेगा तो सारी मक्की खराब हो जायेगी। लाड लडाया बेटो बिगड़े- बच्चे को बचपन में नियन्त्रण में नहीं रखे, उसे सिर पर चढ़ाये तो आगे चलकर वह सेवा करने के बजाय माता-पिता के लिए सिरदर्द का कारण बन जाता है। इसीलिए कहा-

लड़का राखिये हटक में, मत चढ़ाइए शीष।
नितप्रति लाड लडावता, बिगड़े बिस्वाबीस।।
बिगड़े बिस्वाबीस हाथ हुनर नहीं आवे।
बैठ सभा के बीच, ऊँच पद कबहु न पावे।।
कहे गिरधर कविराय सुन अब उसके घर का।
क्रोड़ करो उपाय, कदी न सुधरे लड़का।।

कितनी सुन्दर बात कही। आप इसे संस्कार का नाम दे दीजिये। बाल्य अवस्था में लाड लडाया जा रहा है। जब वह बड़ा हो जायेगा तो आप महाराज से कहेंगे- "बाबजी! इने थोड़ो समझावो।" जन्म देने का काम आपका, बड़ा करने का काम आपका, लाड-लडाने का काम आपका और समझाने का काम महाराज का। बच्चे को सुधारने का समय था तब आपने सुधारा नहीं।

आप अनुभवी हैं, जानते हैं, इसलिये ज्यादा व्याख्या करने की जरूरत नहीं। बचपन में संस्कार दिये जाते तो आज हम लोगों को कहने की जरूरत नहीं पड़ती। आज संस्कारों का एक तरह से दिवाला निकल गया है। न माता को टाइम है, न पिता को फुर्सत। माँ को साज-सज्जा से समय नहीं और पिता को दुकान से फुर्सत नहीं। सवेरे आठ बजे दुकान जायेगा, रात को ग्यारह-बारह बजे लौटेगा। कई बार घर के बच्चे पापा को पहिचानते नहीं। रविवार को एक भोज का आयोजन हुआ। एक दाढी वाले भाई साहब भोजन कर रहे थे। पाँच साल के एक बच्चे ने माँ से पूछ लिया- ये मेहमान कौन? माँ ने कहा ये मेहमान नहीं, ये तेरे पिता हैं। आज बच्चों को संस्कार नहीं दिये जा रहे हैं और आप चाहते हैं कि बच्चे आपकी सेवा करें। आपने बच्चों को बचपन में संस्कार नहीं दिये तो बुढ़ापे में आँसू बहाने पड़ सकते हैं। आज कइयों

की ऐसी स्थिति है। जिनके चार-चार लड़के हैं, व्यापार करते हैं, बहुएँ हैं, किन्तु माँ को अपनी रोटी हाथ से बनानी पड़ती है।

बच्चों के माता-पिता अब अपना स्थान छोड़ रहे हैं। एक चिन्तक ने ठीक ही कहा कि बच्चे के माँ-बाप कौन? माँ तो है रेफ्रीजरेटर और बाप है टी.वी.। आज बच्चे को भूख लगती है तो वह माँ के पास दौड़कर नहीं जाता, वह सीधा रेफ्रीजरेटर का दरवाजा खोलता है। संस्कार देने का टाइम पिता के पास नहीं, आज टी.वी. संस्कारदाता है। फ्रीज और टी.वी. घर-घर में हैं। रहने के लिए मकान बराबर है या नहीं, फ्रीज और टी.वी. प्रायः हर घर में मिल जायेंगे।

आचार्य भगवन्त के साथ बाड़मेर की ओर जाने का प्रसंग बना। मकान में पाँच-पचास लोग होंगे। आधा मकान कोल्हू से बना था। वहाँ के लोग आचार्य भगवन्त की सेवा में आए। एक मिनिस्टर का भी वहाँ पर आना हुआ। गांव वाले आकर कहने लगे कि हमारे गांव में टी.वी. का कनेक्शन नहीं है, आप टी.वी. का कनेक्शन दिलाओ। जो टी.वी. संस्कार बिगाड़ने वाली है उसकी मांग की जा रही है। इस टी.वी. को कोई छोड़ने को तैयार नहीं। आगे कहा- पीहर बिगड़े कामिनी। बहू अगर ससुराल के बजाय पीहर में अधिक रहेगी तो बिगाड़ होने की अधिक संभावना है।

हाँ, तो मैं कह रहा था परिवर्तना या पर्यटना रूप स्वाध्याय नहीं किया जायेगा तो मेहनत से जो कुछ सीखा है वह भूल में पड़ जायेगा, वह जीवन-निर्माण में सहायक नहीं होगा। पान को फेरा नहीं जाएगा तो वह सड़ जाएगा। घोड़े को घुमाया नहीं जायेगा, तो वह अड़ियल बनेगा। चूल्हे पर रोटी को फेरा नहीं जाएगा तो वह जल जाएगी। इसी तरह विद्या को पुनः पुनः याद नहीं किया जायेगा तो वह विस्मृत हो जायेगी। संत आते हैं, मेहनत करके ज्ञान सिखाते हैं, पर ज्यों ही महाराज गये, सीखा ज्ञान भी भूल में पड़ जाता है। जिनको प्रतिक्रमण आता है वे पाक्षिक प्रतिक्रमण नहीं करते, तो उन्हें ग्यारह सामायिक का दण्ड आता है। पर्यटना रूप स्वाध्याय जरूरी है।

स्वाध्याय का चौथा भेद है-अनुप्रेक्षा अर्थात् चिन्तन। आज हर ग्राम-नगर में धार्मिक परीक्षा के आयोज़न चल रहे हैं, पर यदि अनुप्रेक्षा नहीं है तो जैसा लाभ मिलना चाहिये, वैसा लाभ नहीं मिलेगा। जो गाढ़ कर्म बंधे हैं, अनुप्रेक्षा हो तो वे कर्म ढ़ीले होते जायेंगे, शिथिल होते चले

जायेंगे। गाढ़ रस वाले कर्म हल्के रस वाले बनते जायेंगे। कब? जबकि चिंतन हो।

'स्वाध्याय का पाँचवां भेद धर्मकथा है। इससे प्रवचन की प्रभावना होती है। सीखा ज्ञान दूसरों के काम आने वाला बनता है। धर्मकथा रूप स्वाध्याय जरूरी है।

हम सब कुछ करने को तैयार हैं, किन्तु स्वाध्याय करने को तैयार नहीं। आज कई लोग कहते हैं हम सामायिक करते हैं, लेकिन सामायिक में मन नहीं लगता। यह शिकायत कई लोगों की है। आप आगमवाणी का स्वाध्याय करें, मन चंचल नहीं होगा, आपको आनन्द आयेगा। स्वाध्याय से सामायिक में आनन्द आयेगा। विचार शुद्धि होगी तो आचार में निर्मलता आयेगी।

दशवैकालिक सूत्र का स्वाध्याय चल रहा है। इसमें भिक्षु के बावन अनाचार का वर्णन चल रहा है। भिक्षा कैसी हो? टीकाकार कह रहे हैं- **दीनवृत्ति, पौरुषघ्नी सर्वसंपत्करी भिक्षा।**

मांगकर लिया जा रहा है, याचना करके भी लिया जाता है। शास्त्रकार तीन भेद कर रहे हैं। कोई अपंग है, अनाथ है, शरीर में रोग है वह मांगकर ले रहा है यह दीनवृत्ति भिक्षा है। एक भिक्षा पुरुषार्थ का हनन करने वाली है। हट्टा-कट्टा है, जवान है, पर मांगने का स्वभाव पड़ गया। वह स्वयं पुरुषार्थ करके खा सकता है, अपनी शक्ति का गोपन करके चलता है तथा भिक्षा मांगता है उसे पौरुषघ्नी भिक्षा कहा है। तीसरी सर्वसंपत्कारी भिक्षा है। संत गवेषणा कर भिक्षा लेता है, उसकी एषणा-गवेषणा साधना के लिए है। संत दीन बनकर नहीं मांगता। दाता को बढ़ा-चढ़ाकर या उसकी प्रशंसा करके भी नहीं लेता। वह श्रावक को पहले से कहता भी नहीं कि उसे सुबह या शाम को क्या चाहिये।

हम गोचरी जाते हैं, कभी कोई भाई पूछते हैं- अन्नदाता! आप रे सामै री गोचरी में कांई चालै? आपरे खीचड़ी चले, चावल चले? यह पूछने पर बताना श्रमण का आचार नहीं है। जहाँ क्या चलेगा पूछा जाय उस घर में श्रमण को भिक्षा के लिए नहीं जाना चाहिये।

संबाहणा दन्तपहोयणा य।।

ब्रह्मचारी साधक शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए, हट्टा-कट्टा बनने के लिए मालिश न करे। क्योंकि इस शरीर का तो नाश होने वाला

है। शरीर है तो बुढ़ापा आयेगा ही। यह शरीर सदा अच्छा रहने वाला नहीं है। कान में ताला, आंख में जाला, नाक से नाला व मुख से लाला आयेगा ही। आयुष्य लम्बा है तो बुढ़ापा आने वाला है।

एक वृद्ध चल रहा था। पास से एक युवक निकला। वह युवक बोला- आपरो कांई गुम गियो, आप झुकने क्युं चालो? वह बोला- भाई! मेरा जवानी रूपी रत्न गुम गया। तूं गर्व मत कर। म्हारे साठ में बुढ़ापो आयो, थारे चालीस में आ जावेला।

यह शरीर चाहे जितना संवारो, क्षण-क्षण बीत रहा है और आयुष्य समाप्त होने पर नष्ट होने वाला है। यहाँ आने वाले भाई कहते हैं- महाराज! सारे संतों का शरीर कैसा हो गया है? स्नेह भाव से वे ऐसा कहते हैं, परन्तु संतों का ज्ञान-दर्शन-चारित्र और उनकी साधना कितनी उज्ज्वल हो रही है, पूछने वाले थोड़े हैं। शरीर के स्वभाव से चय- उपचय होता रहता है। शरीर की क्षीणता दुःख का कारण नहीं है। संत शरीर को पुष्ट करने के लिए मालिश नहीं करते और न ही दवा का सेवन करते हैं। दवा तो दूर 'दन्त पहोयणा' भी निषिद्ध है।

जैन ग्रन्थ कह रहे हैं कि कोई साधक दांत धवल कर रहा है तो यह दूषण का कारण है। हाँ, रोग की बात अलग है। अगला अनाचार है 'संपुच्छणा'। साधक के लिए कहा जा रहा है- वह गृहस्थ से यह नहीं पूछे कि मैं गोरा हुआ या काला? थक गया या हृष्ट-पुष्ट हुआ? कई लोगों का स्वभाव होता है वे वेट मशीन पर जाकर वजन लेते हैं। कई तो रोज-रोज तुलते हैं। सेठजी, आपकी दुकान में कितना-कितना लाभ हो रहा है, इस तरह साधु प्रश्न नहीं करे। किसी गृहस्थ के रोग हो गया तो श्रावक के यहाँ जाकर नहीं पूछे। हाँ मांगलिक देने जाना पड़े, वह अलग बात है।

एक सेठजी आचार्य श्री की सेवा में आये। बोले- डाक्टर कह रहा है ऑपरेशन कराना होगा। वह कहने लगा- "भगवन्! मेरे अमुक रोग हो गया। आप आज्ञा दो तो मैं ऑपरेशन करवाऊँ।" ऐसे में महाराज को क्या कहना? साधु तो भाषा का उपयोग रखता है, आगम के अनुसार आचरण करता है। वह यह भी नहीं कहता कि तू निर्दोष ऑपरेशन करा ले। ऑपरेशन निर्दोष नहीं होता। सावद्य क्रिया की साधु आज्ञा नहीं देता। भाषा समिति का विवेक रखकर साधु जवाब देता है। साधु कहेगा-नीतिकार कहते हैं रोग बढ़ाने में सार नहीं है। शरीर में

रोग नहीं बढ़ाना चाहिये वह असमाधि का कारण है। इसी तरह किसी से राड़, कलह या द्वेष हो गया तो शास्त्रकार कह रहे हैं तुरन्त क्षमायाचना कर लो। राग-द्वेष बढ़ा तो वह हितकर नहीं होगा। क्षमायाचना से आराधक हो सकते हैं। अन्यथा थोड़ी-सी लड़ाई की गांठ बांधकर रख ली तो साधना और समाधि रहने वाली नहीं है। गांठ पर गांठ लग जाने से गुलगांठ हो जायेगी। हाँ, आप जानते हैं वैर का बंधन रहा तो वह जल्दी हटने वाला नही है। शास्त्र कह रहा है संत जीवन में किसी से बोलचाल हो गई तो वह तुरन्त क्षमायाचना करे। गोचरी, स्थंडिल और स्वाध्याय के पहले क्षमायाचना कर ले।

जितना-जितना स्वाध्याय किया जायेगा, उतनी-उतनी आत्मरमणता बढ़ेगी। जहाँ आचार संहिता का पालन नहीं, वहाँ वातावरण में जैसा आनन्द आना चाहिये, नहीं आता। भगवान ने स्वाध्याय का सुन्दर मार्ग बताया है। आप भी इस स्वाध्याय का आनन्द लेकर शांति और समाधि की तरफ बढ़ सकते हैं। जो स्वाध्याय करेगा, वह आनन्द प्राप्त करेगा।

चिंता को मिटाने वाली साधना

श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन

1. सामायिक हमारी चिंता को मिटाने वाली साधना है। हमारी मोक्षाभिलाषा को व्यक्त करने वाली जीवन की सर्वोत्कृष्ट साधना है।
2. मोक्षानुभव से युक्त साधना है, इच्छा रहित जीवन की साधना है। हमें अपनी चाह मिटानी होगी तभी चिंताएँ समाप्त होंगी। चाह गई, चिंता मिटी। यह एक अखंड साधना है।
3. सामायिक हमें आत्माभिमुखी और विश्वहितैषी बनाती हुई कर्त्तव्य परायण बनाती है। यह हमारी पापानुबंधी बहिर्मुखी मनोवृत्ति को बदल कर पुण्यानुबंधी अन्तर्मुखी बनाने की प्रेरणा देती है।
4. आत्मोत्थान के लिए सामायिक मुख्य प्रयोग है। समस्त धार्मिक क्रियाओं के लिए आधारभूत होने से ही सामायिक को छः आवश्यकों में प्रथम स्थान प्राप्त है। समता भाव की पुष्टि की दृष्टि से सामायिक आवश्यक है। यह एक उत्कृष्ट साधना है।

-छोटी कसरावद

आदर्श मुनि-जीवन

पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

कम से कम बोलना और अधिक से अधिक काम करना, इन दो बातों में मुनिजीवन का सार आ जाता है। मजबूरी से बोलना ही पड़े तो बोलते समय अपनी प्रशंसा और दूसरे की निंदा का एक शब्द भी मुँह से न निकले, इसकी पूरी सावधानी रखनी चाहिए।

निन्दनीय भी निन्दा का पात्र नहीं, बल्कि कर्मस्थिति का विचार करके दया का पात्र होता है। जब तक केवलज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक अपनी आत्मा प्रत्यक्षतः अत्यन्त निर्गुणी होने से बिल्कुल प्रशंसा करने योग्य नहीं है।

अनेक वर्षों तक किये गये शास्त्रों के परिशीलन के बाद और विनय के साथ सद्गुरुओं के पास रह कर प्राप्त किये हुए अनुभव से सिद्ध हुई। यह हितशिक्षा देखने में भले ही सामान्य लगती हो, लेकिन अर्थ की दृष्टि से गम्भीर आशययुक्त और शास्त्र मंथन से निकली हुई होने से आत्मा के लिए अत्यन्त हितकारी और अन्त में लाभ देने वाले साक्षात् अमृतकुम्भ जैसी है।

इस हितशिक्षा/ उपदेश को इस विषम काल में यदि प्रत्येक मुनि अत्यन्त आदर से अपना ले तो भी बहुत कुछ सिद्ध हो सकता है।

शास्त्रकार महर्षियों ने तीनों जगत् में रहे जीवों में सबसे अधिक सुखी कौनसा जीव हो सकता है, इसकी व्याख्या करते समय देवलोक के सुख का सुन्दर रीति से वर्णन किया है। लेकिन इस वर्णन के बाद, अन्त में यह स्पष्ट बताया है कि देवलोक के सुखों का उपभोग करने वाली आत्माओं से अधिक सुखी सिर्फ एक वर्ष के दीक्षापर्याय को धारण करने वाला मुनि होता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि मुनि शास्त्रोक्त विधि के अनुसार, हितैषियों की ओर से मिलने वाली हितशिक्षा ग्रहण करता जाए और अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसका सावधानी से यथासंभव पालन करने में प्रयत्नशील बने, तो वह एक ही वर्ष में देवलोक की सभी सुखी आत्माओं के सुख को लांघ जाता है, अर्थात् उनसे बढ़कर सुखी होता है। सभी प्रकार के सांसारिक सुख, दुःखजन्य और दुःख फलक होने से उसकी उपेक्षा करने वाला मुनि सुरसुख को दुःख स्वरूप ही मानता है।

दूसरी ओर अनुत्तर विमान में रहने वाले देव दिन-रात, हर समय मुनि-जीवन के सुख की प्राप्ति की इच्छा करते हैं।

छह खंड के अधिपति चक्रवर्ती जब मुनि धर्म की महत्ता समझ जाते हैं, तब वे भी अपनी विपुल समृद्धि को तृणवत् तुच्छ समझते हैं, उसका त्याग करते हैं और आनन्द से साधुजीवन स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा करने में ही वे अपने जन्म की सार्थकता मानते हैं।

इस तरह संसार की सभी सुखी आत्माओं में मुनियों का क्रम सर्वप्रथम आता है। श्री अरिहन्तादि पंच परमेष्ठियों का भी मुनियों में समावेश होता है।

मुक्ति की प्राप्ति के लिए सबसे पहले मुनिधर्म का यथार्थ ढंग से पालन करना है। इसके सिवाय मुक्ति-प्राप्ति के लिए होने वाले अन्य सभी मार्ग अपवादात्मक या बाधायुक्त हैं। इन अन्य मार्गों से शायद ही कभी कोई जीव मुक्ति प्राप्त कर पाता है।

मुनिधर्म का माहात्म्य, विस्तार से बताने के पीछे उद्देश्य यह है कि इस प्रकार का उत्तम फलदायी और सर्वश्रेष्ठ मुनिधर्म स्वीकार कर लेने के बाद उसे अच्छी तरह से सफल कर लेने के लिए उसका पालन किस रीति से करना चाहिए, यह जान लिया जाए।

श्री जिनेश्वर देवों द्वारा बताया हुआ मुनिधर्म इस प्रकार है कि इसका पालन घर में रहकर या अकेले रहकर नहीं, बल्कि गुरुकुल में गुरु के पास रहकर होता है।

अनन्त उपकारी श्री जिनेश्वर देवों ने संयम-पालन के जो लाभ बताये हैं, उनको पाने के लिए जो विधि बताई है, उसका जब तक यथार्थ रीति से पालन नहीं किया जाता, तब तक वे लाभ कभी प्राप्त नहीं हो सकते हैं।

जो संयम एक ही जन्म में मुक्ति देता है, उसका अनेक बार पालन करने पर भी यदि हम मुक्त नहीं हो पाते हैं, तो उसका कारण आज्ञा के अनुसार विधिपूर्वक आराधना करने में हमारी कमी ही है।

प्रत्येक क्रिया का जो फल बताया गया है, वे क्रियाएँ तभी यथार्थ फल दे पाती हैं, जब उन क्रियाओं की विधिपूर्वक सम्यक् आराधना की जाती है, अन्यथा नहीं।

उत्तम क्रियाएँ भी जब फल नहीं देती हैं, तो इसका कारण यह है कि वे क्रियाएँ जिस प्रकार से करनी चाहिए, उस प्रकार से नहीं की

गई हैं।

मुनिजीवन सर्वश्रेष्ठ है और उसका पालन अनन्त उपकारियों की आज्ञा के अनुसार गुरुकुल (गच्छ) में रहकर ही किया जा सकता है। गुरुकुल में रहते हुए भी यदि मुनि अनन्त ज्ञानियों की आज्ञा के अनुसार वर्तन न करे, तो गुरुकुल में रहना भी उसके लिए फलदायी नहीं बन सकता है, बल्कि वह अनेक प्रकार की भंयकर विराधना का स्थान बनता है। अन्त में वह आत्मा की अधोगति का ही कारण बनता है।

साधुपना स्वीकार कर लेने के बाद गुरुकुल में मुनि को अपना आराधक भाव निरन्तर बनाये रखने की दृष्टि से कैसे रहना चाहिए और गुरुकुल में रहने के सारे अनुपम लाभ कैसे प्राप्त हों? इस संबंध में यहाँ संक्षेप में कहने का उद्देश्य है।

जिस गुरुकुल में मुनि को रहना है, वहाँ साथ में रहने वाले सभी मुनि हरदम एक ही विचार या पद्धति के हों, यह संभव नहीं है।

अनादिकाल से सभी आत्माओं की भवस्थिति एक-सी नहीं होती है। कोई लघुकर्मी आत्मा अल्प संमय में ही मुक्ति पाने वाली होती है, तो कोई अन्य आत्मा लम्बे समय के बाद मुक्ति प्राप्त करने वाली होती है। जब तक भवस्थिति परिपक्व नहीं होती है, तब तक उसकी आत्मा पर लगा हुआ रागादि मल उसकी इच्छा होने पर भी कम नहीं हो सकता है। भवस्थिति की परिपक्वता किसी की बनायी हुई वस्तु नहीं है, बल्कि यह स्वाभाविक रूप से अथवा पाँच समवायों के मिलाप से उत्पन्न होने वाली वस्तु है। उन पाँच समवायों का मिलाप किसी के हाथ की बात नहीं है। इसलिए मुनि को जिस गुरुकुल में रहना है, वहाँ हरदम भिन्न-भिन्न प्रकृति की आत्माएँ अवश्य रहेंगी। सभी प्रकार की आत्माओं को अधिक गुणी, समान गुणी, हीन गुणी और निर्गुणी इन चार विभागों में बांटा जा सकता है।

इन चारों प्रकार की आत्माओं के साथ रहने वाला मुनि सावधानी से न रहे तो उसे सभी स्थानों में कर्मबंध ही होता है और सावधान रहे तो ये चारों स्थान उसकी आत्मा के लिए हितकारी सिद्ध होते हैं।

अपने से अधिक गुणवान मुनि को देखकर, खुश होकर उसके गुण की हार्दिक अनुमोदना करनी चाहिए और अपने मन में सोचना चाहिए कि मैं कैसा भाग्यवान हूँ कि मुझे ऐसे गुणवान मुनिराज का शुभ

सम्पर्क मिला है।

समान गुणी को देखकर सोचना चाहिए कि इस जगत् में सभी बातें सुलभ हैं। लेकिन समान गुणी आत्माओं का समागम दुर्लभ है। मैंने जो गुण प्राप्त कर लिया है, वही गुण इस गुणवान आत्मा ने भी प्राप्त किया है और ऐसे समान गुणी आत्मा की संगति मिलने से मैं धन्य हो गया हूँ।

हीनगुणी आत्मा को देखकर सोचना चाहिए कि यदि इस जगत् में कोई याचक ही न हो तो, दाता के दान की कीमत क्या रहेगी। याचक के होने पर दाता दान दे सकता है और थोड़ा-सा देकर अनन्त पुण्य प्राप्त कर लेता है। इसलिए मुझसे हीनगुणी आत्माएँ होने से ही मुझे पुण्य उपार्जन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। निर्गुणी आत्मा को देखकर उसकी भवस्थिति का विचार करना चाहिए।

गुरुकुल में रहने वाले प्रत्येक मुनि को अपने साथ रहने वाले सभी मुनियों के साथ होने वाले व्यवहार में हरदम ऐसा ख्याल रखना, उसके लिए हितावह है। दूसरे के कर्त्तव्य की ओर देखने पर अनेक कठिनाइयाँ सामने खड़ी होंगी और आराधक भाव नहीं टिकेगा।

दूसरों का कर्त्तव्य क्या है? यह देखने का अधिकार गुरुओं का होता है, हमारा नहीं। इस प्रकार अनधिकार से हस्तक्षेप हो तो आराधना में कठिनाइयाँ खड़ी हो जाती हैं।

मुनिधर्म को स्वीकार करना अपनी आत्मा के सुधार के लिए है, इस तथ्य को भूलकर योग्यता प्राप्त किये बिना दूसरों को सुधारने की कोशिश करना सर्वथा अनुचित है। *-प्रेषक : श्री नवरतनमल डोसी, जोधपुर*

लोंकाशाह

श्री दिलीप धींग

दृढ़ संकल्प, अटूट-निष्ठा, अप्रमित उत्साह चाहिये,
सृजनपरक क्रान्ति का प्रबलतम प्रवाह चाहिये।
निन्दक-प्रशंसक, आत्म-वंचक मिलेंगे बहुत यहाँ,
सत्यान्वेषी, सत्याग्रही, विषपायी लोकाशाह चाहिये।।

-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)

क्रोध विजय के व्यावहारिक उपाय

श्री सम्पतराज डोसी

श्रीमान् सम्पतराजजी डोसी जैनागम एवं थोकड़ों के मर्मज्ञ विद्वान् होने के साथ साधक भी हैं। आप विषम परिस्थितियों में भी स्थूल क्रोध नहीं करते हैं। वास्तव में प्रत्याख्यान तो कषायों का ही होता है। यह लेख श्रीमान् डोसी सा. की सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित लघु पुस्तिका 'कषाय-विजय के व्यावहारिक उपाय' से दिया जा रहा है। -सम्पादक

क्रोध एवं उससे हानियाँ

आक्रोश करना, कुपित होना, नाराज होना, गुस्सा करना आदि क्रोध के पर्यायवाची शब्द हैं। हमारे मन अथवा इन्द्रियों के प्रतिकूल किसी भी परिस्थिति के निर्माण में जिस पदार्थ या व्यक्ति का हाथ होता है, उस पर हम क्रोध करने लग जाते हैं।

किसी भी प्रतिकूलता के प्रसंग पर क्रोध नहीं करने की भावना पहले तीव्र रूप से बननी चाहिये और यह भावना तभी बन सकती है जब पहले क्रोध से होने वाली हानियों को अच्छी तरह समझ लिया जाए। क्रोध से अनेक हानियाँ हैं, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं-

१. क्रोध करते ही हमारा खून विषमय बन जाता है और जलने लगता है। ज्यादा क्रोध में अगर माता अपने बच्चे को स्तनपान करा दे तो क्रोध के कारण जहरीले बने दूध से बच्चा मर भी सकता है।

२. क्रोध के आवेश में भविष्य के हिताहित सोचने की शक्ति नष्ट हो जाती है। एक कवि ने भी कहा है-

गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता।
तेज चला जाता आंखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता।
अकल न जाने कहाँ जाती है, ज्ञानी और गंवार की।
छोड़ो क्रोध लोभ मद माया, गलियां नरक द्वार की।।

३. क्रोधावेश में व्यक्ति को मैं कौन हूँ, किसके सामने बोल रहा हूँ और क्या शब्द बोल रहा हूँ इसका भी ध्यान नहीं रहता अर्थात् ज्ञान एवं विवेक रूपी आंखें बन्द हो जाती हैं और मुंह खुल जाता है।

४. क्रोधावेश के समय मस्तिष्क के ज्ञान-तन्त्र नष्ट हो जाते हैं, जिससे सोचने की क्षमता नष्ट हो जाती है।

५. क्रोधी व्यक्ति से सभी घृणा करते हैं और पीठ पीछे उसकी बुराई ही

करते हैं।

६. क्रोध से स्नेहीजनों की भी प्रीति नष्ट हो जाती है- पिता, पुत्र, भाई, पत्नी आदि का प्रेम भी नष्ट हो जाता है।

७. क्रोध से अशुभ कर्मों का बंध होता है और भवान्तर में भी वैर की भावना बनी रहती है।

८. क्रोधावेश में आत्म-हत्या तथा दूसरों की भी हत्या तक कर गुजरते हैं।

६. क्रोध का असर अपनी संतति पर भी बुरा पड़ता है।

१०. क्रोध से वर्षों का किया हुआ तप-जप क्षण भर में नष्ट हो जाता है।

११. अग्नि मुर्दे को जलाती है, पर क्रोध से व्यक्ति बिना अग्नि ही स्वयं जलता रहता है। क्रोध, अग्नि से ज्यादा दाहक, शस्त्र से ज्यादा मारक तथा जहर से ज्यादा घातक होता है।

क्रोध को कम करने के लिये नित्य सुबह निम्न प्रकार का चिन्तन करना चाहिये तथा दिनभर क्रोध नहीं करने का दृढ़ संकल्प धारण करना चाहिये। शाम को पुनः देखना चाहिये कि सुबह किए हुए संकल्प से कुछ असर रहा या नहीं? अगर आज नहीं भी रहा हो तब भी कल अवश्य अन्तर पड़ेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास रखना चाहिये।

क्रोध उत्पन्न होने के कारण एवं क्रोध को जीतने के उपाय

क्रोध उत्पन्न होने के अनेक कारण होते हैं, फिर भी मुख्य रूप से जो कारण अधिकांश व्यक्तियों में बनते हैं, उनमें से कुछ नीचे दिये जा रहे हैं। उन कारणों के उपस्थित होने पर हमें किस प्रकार विचार करना चाहिये ताकि उस प्रसंग पर हमें आता हुआ क्रोध रुक जाय, यह भी प्रत्येक कारण के साथ ही दिया जा रहा है।

१. किसी दूसरे व्यक्ति से अगर कोई वस्तु टूट जाये, बिगड़ जाय, गुम हो जाय या किसी भी अन्य प्रकार की हानि हो जाय तो उस व्यक्ति पर हमें क्रोध आता है।

ऐसे प्रसंग पर सोचना चाहिये कि जिस व्यक्ति से बिगाड़ हुआ, उसने जानबूझकर तो बिगाड़ किया नहीं और अगर यही बिगाड़ मेरे से हो जाता तब फिर किस पर क्रोध करता? दूसरी बात कि क्रोध करने पर भी बिगड़ी हुई, टूटी हुई या गुम हुई वस्तु वापिस तो आ नहीं सकती। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि अगर बिगाड़ या हानि

करने वाले को क्रोध करके न कहा जाय तो वह बार-बार ऐसी गलती करेगा। परन्तु वास्तव में उस समय उस पर क्रोध न करके बाद में प्रेमपूर्वक मीठे शब्दों से समझाने पर ज्यादा और अच्छा असर होता है।

२. दूसरे को सुधारने के लिये हम उसे कोई बात कहें पर वह न माने और बार-बार कहने पर भी न माने तब हमको गुस्सा आता है। इस प्रसंग पर ऐसा सोचना चाहिये कि मेरी बुरी आदत को छोड़ने के लिये अगर मुझे दस-बीस बार भी कोई कहे तो क्या मैं अपनी बुरी आदत छोड़ सकता हूँ? अगर नहीं तो जिस प्रकार मेरे लिए बुराई छोड़ना कठिन है, वैसे ही सबके लिए अपनी-अपनी बुराई छोड़ना कठिन होता है। इसलिये दूसरे से ऐसी आशा क्यों रखूं कि वे मेरे कहते ही मान जाय। इस प्रकार विचार कर अगले व्यक्ति को उस बुराई से होने वाली हानियों को बार-बार प्रेमपूर्वक समझाने का प्रयत्न करने पर वह मान सकता है। क्रोध करते हुए बार-बार कहने पर हमारी शांति भंग होती है और दूसरे के मन पर भी बुरा असर पड़ता है।

३. कोई व्यक्ति हमारे प्रत्यक्ष या परोक्ष में हमारी सच्ची या झूठी निन्दा करे तब भी हमसे सहन नहीं होता। अपनी बुराई सुनकर हमें यह सोचना चाहिये कि जो बात मेरे लिये कही जा रही है वह सच्ची है या झूठी? अगर निन्दा की बात सच्ची है तब मुझे उस व्यक्ति पर क्रोध करने के स्थान पर उसका उपकार मानना चाहिये तथा उस बुराई को निकालने का प्रयत्न करना चाहिये। गलती बताने वाले पर क्रोध करना या उसे बुरा समझना तो अपनी बुराई को ढकना होगा और उससे वह बुराई या गलती और ज्यादा बढ़ेगी।

यदि निन्दा की बात झूठी है तो भी क्रोध करने की कोई आवश्यकता नहीं। सांच को आंच कहाँ है? ऐसा समझकर और मेरे पूर्वकृत अशुभ कर्मों का उदय है, ऐसा विचारकर शान्ति रखनी चाहिये। संसार में बड़े से बड़े व्यक्तियों के भी निन्दक हुआ करते हैं, फिर मेरी तो बात ही क्या?

४. कोई व्यक्ति हम पर सकारण या अकारण क्रोध करे या हम पर अत्याचार करे तब हम प्रायः धैर्य या समता खोकर क्रोध करते हैं। अगर हमसे कोई गलती हो गई तब तो अपनी गलती का फल या

सजा मिल रही है, ऐसा समझकर क्षमा धारण करनी चाहिये। अगर कोई अकारण भी निन्दा करता है तब भी अशुभ कर्मों का उदय समझना चाहिए। निन्दक तो मात्र निमित्त होता है। उसको ऐसा समझकर क्षमा धारण करना ही उत्तम रहता है।

५. कोई जड़ वस्तु अचानक खराब हो जाय, जैसे जरूरी कार्य हेतु जा रहे हैं और स्कूटर खराब हो जाये, लिखना जरूरी है और पैन खराब हो जाय, रास्ते में गोबर या केले के छिलके आदि पर पैर आ जाने से फिसल जाय तब भी क्रोध आ जाता है।

उस समय भी यह सोचना चाहिये कि ये जड़ पदार्थ हैं। इन पर क्रोध करके या इनको तोड़ने से नुकसान किसका होगा? ठोकर लगने पर या पैर फिसलने में भी गलती तो मेरी है, फिर निरर्थक क्रोध क्यों करूँ?

६. क्रोधियों की संगति करने से भी क्रोध की आदत बन जाती है। इसलिये क्रोधियों की संगत से बचना चाहिये।

७. किसी भी प्रसंग पर क्रोध न करने के तत्कालीन उपाय निम्न हैं-

(अ) किसी भी प्रसंग पर क्रोध आने की संभावना लगती हो तो उस समय मौन धारण कर लेना चाहिये।

(ब) मौन धारण करके रहना भी अगर संभव न हो तब उस प्रसंग से कुछ समय के लिये दूर हट जाना चाहिये।

(स) एक से सौ तक की गिनती करने लग जाना चाहिये।

(द) ठण्डा पानी पी लेना चाहिये।

(य) मुँह में लकड़ी का टुकड़ा या अन्य कोई चीज डालकर दांतों से दबाये रखना चाहिए जब तक प्रसंग मिट न जाय।

ऊपर के क्षणिक उपायों से थोड़ी देर के लिये वचन या काया से क्रोध रुक जाता है, परन्तु मन की अशान्ति मिटना संभव नहीं है। स्थायी एवं वास्तविक उपाय पूर्व लिखित क्रम सं. १ से ६ तक के ही हैं जिनके फलस्वरूप उत्पन्न होता हुआ क्रोध भी नष्ट किया जा सकता है।

चिन्तन बिन्दु

१. 'क्षमा वीरस्य भूषणं' अर्थात् क्षमा वीरों का व समझदारों का आभूषण है। इस कारण मुझे इसका निरन्तर अभ्यास बढ़ाते रहना चाहिये।

२. मेरी आत्मा में सहनशीलता की अनन्त शक्ति छिपी हुई है। भगवान

महावीर, गजसुकुमाल मुनि, स्कन्दक मुनि, अर्जुनमाली आदि महापुरुषों ने उसी शक्ति को प्रकट करके, महाभयंकर कष्ट सहन करके भी क्रोध को नहीं आने दिया, तो क्या मैं अपने संबंधियों के वचन भी सहन नहीं कर सकता?

३. जिस प्रकार शराब, पान, बीड़ी, चाय आदि के व्यसन भी दृढ़ निश्चय के बिना नहीं छूट सकते तब ये क्रोध आदि तो मेरे भवान्तर के घनिष्ठ संबंधी हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिये मुझे बार-बार अभ्यास करते रहना चाहिये।

४. करोड़ों वर्षों तक जप-तप करने एवं अरबों रुपये का दान देने से भी क्षण भर की क्षमा करने का फल कई गुना अधिक है। कहा भी है-

क्रोड़ पूरब कोई तप तपे, एक सहे कोई गाल।
जे में नफो है घणो, मेटो मन की झाल।।

५. क्षमा के आचरण से सारा परिवार सुधर सकता है, और घर स्वर्ग के समान बन सकता है। सुख, शान्ति व लक्ष्मी का भी निवास उसी घर में होता है, जिस घर में प्रेम का वातावरण होता है।

६. प्रतिदिन सुबह और शाम ५-१० मिनट चिन्तन करना चाहिये कि आज दिन भर क्रोध के कितने प्रसंग आये। उनमें से कितनी बार मेरा उन पर ध्यान रहा और कितनी बार नहीं रहा, अब पुनः दृढ़तापूर्वक निश्चय करता हूँ कि किसी भी प्रसंग में क्रोध नहीं आने दूंगा।

७. जब कभी क्रोध आये तब सोचना चाहिये कि क्रोध का कारण क्या था और मेरे सोचने में कहाँ कमी रही। कमी का पश्चात्ताप करके भविष्य में ऐसी गलती न हो, इसकी सावधानी रखनी चाहिये।

८. जब मुझ पर दूसरा कोई क्रोध करे तब मुझे कितना बुरा लगता है? इसी प्रकार मेरे गुस्से से भी अगले व्यक्ति को ऐसा ही बुरा लगता है। यह एक प्रकार से भाव-हिंसा है।

इस प्रकार के विचारों का बार-बार चिन्तन-मनन करते रहने से तथा प्रसंग उपस्थित होने पर विचारों द्वारा ही क्रोध को रोकने का अभ्यास करते रहने से व्यक्तियों की प्रवृत्ति में बड़ा अन्तर आ सकता है। वर्तमान में भी सैकड़ों व्यक्ति ऐसा चिन्तन और अभ्यास कर रहे हैं और उनके स्वभाव में अच्छा परिवर्तन आ रहा है, तब फिर मुझमें भी अवश्य अन्तर आयेगा।

-डागा बाजार, जोधपुर

बालकों के आवश्यक संस्कार

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

मानव जीवन संस्कारों के संतुलन से सुखी और सुव्यवस्थित होता है। उसकी सही पहचान जीवनगत संस्कारों से होती है और संस्कारों से ही मनुष्य का सही मूल्यांकन होता है। उच्च कोटि के श्रमण के शब्दों में-

"संस्कारशील सन्तान हमारी श्रेष्ठतम निर्मिति है। वे हमें जीते जी तो सुख पहुंचाते ही हैं, मरणोपरान्त भी न केवल हमें याद करते हैं, वरन् हमारी गौरवगाथा को अक्षुण्ण बनाये रखते है।"

अच्छे माता-पिता अपनी संतान को सही संस्कार देते हैं। संस्कार देने वाले माता-पिता गुरु का भी दायित्व निभाते हैं। शैशव काल में सहजता, कोमलता और निर्मलता के साथ बुद्धि का अनाग्रह भाव तत्त्व के रहस्य को ग्रहण करने में जितना सहायक होता है वह अन्य अवस्थाओं में नहीं। बचपन के संस्कार परछाई की तरह साथ-साथ चलते हैं।

जिज्ञासु गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से दैनिक क्रियाओं के संबंध में प्रश्न किया-

"कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बंधई।।"

हे भगवन! चलना-फिरना, खाना-पीना, उठना-बैठना आदि क्रियाएँ अनिवार्य हैं। ये क्रियाएँ किस ढंग से की जावें जिससे पापकर्म से बचा जा सके?

भगवान महावीर ने उत्तर दिया-

"जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बंधई।।"

अर्थात् विवेक और यतना से चले, खड़ा रहे, बैठे, शयन करे और विवेक तथा यतना से ही भोजन और भाषण करे। इस विधि से प्रवृत्ति करने वाला साधक बाह्य क्रियाएँ करता हुआ भी पाप कर्म का बंधन नहीं करता।

साधक को ही नहीं, बालक को भी प्रत्येक क्रिया विवेक और यतनापूर्वक करना चाहिए। बालक जल, वनस्पति, पृथ्वी, अग्नि या वायु

का उपयोग इस तरह से करें कि हिंसा कम से कम हो। त्रस जीवों की हिंसा से पूरे बचें। सत्य की माता अहिंसा है। सत्य के संस्कार से आत्मा को असीम बल मिलता है। सत्य के प्रभाव से सभी मन्त्र, योग, धर्म, अर्थ और काम सिद्ध हो जाते हैं। सारे रोग-शोक नष्ट होते हैं। बालक सत्य का महत्त्व समझें। कहा है-सत्य वाणी की पवित्रता है। जैनागम में सत्य को भगवान कहा है- सच्चं खु भगवं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी सत्य को ईश्वर मानते थे।

"God is truth and truth is God."

सत्य ही जीवन है।

"Truth is life."

बालकों को कोई वस्तु किसी के देने पर ही उसे ग्रहण करना चाहिए। किसी वस्तु को स्वामी की अनुमति के बिना अपने अधिकार में कर लेना चोरी है।

बालकों को निम्नलिखित सात कुव्यसनों का परित्याग बचपन में ही कर देना चाहिए- १. जुआ २. मांस ३. शराब ४. वेश्यागमन ५. पर-स्त्री गमन ६. शिकार ७. चोरी।

"जुआ खेलना, मांस मद, वेश्यागमन शिकार।
चोरी पर-रमणी-रमण, सातों नरक द्वार।।"

बालकों को आहार सात्त्विक करना चाहिए। कहा है- "सात्त्विक भोजन से तुष्टि, पुष्टि और तृप्ति होती है। सात्त्विक भोजन करने से मन स्वस्थ और प्रसन्न रहता है। बालक समझें कि जीने के लिये भोजन है, भोजन के लिए जीवन नहीं। ज्यादा भोजन करने से पाचन-तन्त्र कमजोर पड़ता है। गांधी जी कहा करते थे- "खुराक स्वाद के लिये नहीं परन्तु शरीर को दास की तरह पालने के लिये है। जीने के लिये खाओ, खाने के लिये न जीओ।"

"Eat to live and don't live to eat"

बालकों को रात्रि भोजन से भी बचना चाहिये। रात्रि भोजन से कई नुकसान हैं। बालकों को यह अनुभव होगा कि सात्त्विक आहार करने से आयु, बल, बुद्धि और सुख की वृद्धि होती है। ऐसे आहार से ही शरीर, मन और आत्मा की उन्नति होती है। राजसी भोजन से दुःख, शोक और रोग पैदा होते हैं। "स्वल्पाहारी स जीवति" अल्प आहार करने वाला दीर्घजीवी होता है।

पानी को सदैव छानकर पीना चाहिए।

बालकों को अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए। सत्संगति से बालक भविष्य में महान् बन सकता है।

"A man is known by the company he keeps."

बालकों को मूर्खों की संगति चाहे आरम्भ में प्रसन्नता एवं सुख पहुंचाने वाली क्यों न हो, किन्तु परिणाम में वह पश्चात्ताप कराए बिना नहीं रहती है। सत्संगति दुष्कृत्यों के माया जाल से बालक को निकाल कर मानवता के मनभावन मधुवन में ले जाती है।

"Good Company brings everything good.

बालकों को बुरे लोगों की संगति नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसमें धर्म का नाश, अपकीर्ति और दुःख प्राप्ति के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता है।

बालकों को अति निद्रा नहीं लेना चाहिए। उनमें जल्दी सोने एवं जल्दी उठने की आदत होनी चाहिए। कहा भी है–

"Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise."

जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनी एवं बुद्धिमान बनाता है। बालकों को आठ घण्टे से अधिक नहीं सोना चाहिए और सूर्योदय से पहिले उठ जाना चाहिए। श्वान निद्रा (कुत्ते जैसी नींद) काक चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान और ब्रह्मचारी होना, ये सच्चे विद्यार्थी के लक्षण हैं।

बालकों को माता-पिता, बड़ों की व गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनकी सेवा करनी चाहिए। आज्ञापालन बड़ों के प्रति अपने कर्त्तव्य का तकाजा है। दयालु, नम्र और ईमानदार बनने की प्रेरणा आवश्यक है-**"Be kind, humble and honest"**

बालकों को दृढ़ संकल्पी और आत्मविश्वासी होना चाहिए, क्योंकि आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में दृढ़ संकल्प और आत्मशक्ति के सामने कोई बाधा, कोई विकार और किसी तरह का कोई अमंगल टिक नहीं सकता। किसी ने ठीक कहा है-

"Self confidence is the key of success."

महात्मा टाल्सटाय ने भी कहा है-

"Faith is the force of life."

बालकों को विद्या के प्रति प्रेम होना चाहिए। पढ़ने-लिखने के अलावा विद्या ही विनय, नम्रता, ज्ञान, धर्म और सुख की जननी है और आत्म विश्वास की ओर ले जाती है। पढ़ा-लिखा और गुना हुआ व्यक्ति अपनी जाति, देश और कुल का गौरव होता है। वह विद्या के अध्ययन से अनुशासन में रहना सीखता है। बिना अनुशासन के उच्छृंखलता, अनाचार, स्वच्छन्दता आदि दुर्गुणों का संचार होता है।

बालकों को राजकीय कानून और उसके तहत बनाए हुए नियमों का पूर्ण पालन करना चाहिए, क्योंकि कानून और नियमों की अवहेलना अथवा उल्लंघन करने से दण्ड और सजा दी जाती है, जो अच्छे मानव के लिए अशोभनीय है। अच्छे नागरिक कानून व नियमों का पालन करते हैं।

बालकों को बुरे विचारों से बचने के लिये निम्न बातें ध्यान में रख कर अमल में लानी चाहिए- १. प्रभु प्रार्थना करना २. आलस्य न करना ३. अच्छी संगति करना ४. अश्लील साहित्य न पढ़ना ५. नृत्य, नाटक, सिनेमा आदि न देखना ६. अपने आपको हमेशा परखते रहना ७. इन्द्रियों को वश में रखना ८. बुरे विचारों को हृदय में स्थान न देना ६. परमार्थ की शिक्षाओं को ध्यान में रखना १०. वासनाओं को जीतने हेतु मन को काबू में रखना।

प्रत्येक बालक उच्च कोटि का श्रावक अथवा नागरिक बनने की योग्यता रखता है। बालकों के उज्ज्वल जीवन के लिये कुछ सुझाव इस प्रकार हैं- १. पापों से भयभीत रहे २. सदाचारी पुरुषों की संगति करे ३. माता-पिता की सेवाभक्ति करे ४. निन्दनीय कार्यों में प्रवृत्त न हो ५. अजीर्ण होने पर भोजन न करे ६. नियत समय पर संतोष के साथ भोजन करे ७. अतिथि, साधु और दीनहीन जनों का यथायोग्य सत्कार करे ८. कभी दुराग्रह से ग्रस्त न हो ६. गुणों का पक्षपाती हो, जहाँ कहीं गुण दिखायी दें, उन्हें ग्रहण करे, देशकाल के प्रतिकूल आचरण नहीं करे १०. आगे-पीछे का पूरा विचार करके कार्य करे ११. अपने हिताहित को समझे १२. कृतज्ञ हो अर्थात् अपने प्रति किये गये उपकार को नम्रतापूर्वक स्वीकार करे १३. लज्जाशील हो- अनुचित कार्य करने पर लज्जा का अनुभव करे १४. दयावान हो १५. परोपकारी हो १६. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद व मात्सर्य आदि मानसिक शत्रुओं को पराजित करे और १७. इन्द्रियों को अपने वश में रखे।

बालको को ऊपर बताए गए संस्कारों की प्रेरणा देने और उनको क्रियान्वित करने हेतु शिक्षण शालाओं और धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना की जावे और संस्थाओं के माध्यम से दैनिक क्रियाएँ विवेक और यतना से करने का अभ्यास कराया जावे।

बालकों को मेरा संदेश है-

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।"

उठो, जागो और चलते रहो जब तक मंजिल तक न पहुँच जाओ।

-पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय

संरक्षक, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

'चन्दन' बी-२ रोड़, पावटा, जोधपुर

अमृत-वचन

श्री प्रेमचन्द जी कोठारी

१. भगवान कोई अलग नहीं होते। यदि सही दिशा में पुरुषार्थ करे तो प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है।

२. भगवान जगत का कर्त्ता, हर्त्ता या सुखदाता नहीं होता। भगवान तो समस्त जगत का मात्र ज्ञाता-द्रष्टा होता है।

३. जो समस्त जगत को जानकर उससे पूर्ण अलिप्त तथा वीतराग रह सके तथा जगत से पूर्ण रूप से अप्रभावित रह सके, वही भगवान है।

४. अपने को नहीं पहचानना ही सबसे बड़ी भूल है। अपना स्वरूप समझना ही अपनी भूल सुधारना है।

५. स्वयं को जानो, स्वयं को पहचानो, स्वयं में समा जाओ, अवश्य भगवान बन जाओगे।

६. प्रत्येक आत्मा में अनन्त ज्ञान व अनन्त सुख भरा हुआ है। सुख व ज्ञान कहीं बाहर से नहीं आता है।

७. सब आत्माएँ समान हैं, कोई भी आत्मा छोटी-बड़ी नहीं है।

८. सब जीव अपनी भूल से ही दुःखी हैं। अपनी भूल सुधार कर सब सुखी हो सकते हैं।

९. धर्म व्यक्ति, परिवार, समाज, देश-विदेश व विश्व को जोड़ता है, तोड़ता नहीं है।

भारतीय संविधान और जैन अल्पसंख्यक

श्री आर.एम. कोठारी

भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों के संरक्षण एवं अधिकार अनुच्छेद २६ व ३० में वर्णित हैं। राजस्थान सहित अनेक राज्यों में जैनों को अनुच्छेद ३० में "धार्मिक अल्पसंख्यक" (Religious Minority) घोषित किया गया है। राजस्थान सरकार ने दिनांक १६ सितम्बर २००३ को निम्न अधिसूचना जारी की है-

राजस्थान सरकार

समाज कल्याण विभाग

क्रमांक : एफ 7(4)(9)अराआ/विकास/सकवि/02/62784,जयपुर दिनांक 19/9/2003

अधिसूचना

राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, २००१ की धारा २ के खण्ड (iii) के उपखण्ड (ख) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिए राजस्थान राज्य में जैन समुदाय को इसके द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित करती है।

राज्यपाल के आदेश से
ललित मेहरा
शासन सचिव

इस अधिसूचना से जैन समुदाय को क्या हानि हुई है व क्या लाभ हुआ है, जानना जरूरी है। कुछ शंकाएँ भी उठ रही हैं, उन्हें दूर करना आवश्यक है।

हानि– अल्पसंख्यक (धार्मिक अल्पसंख्यक-Religious Minority) घोषित होने से किसी भी प्रकार से हानि नहीं हुई है।

मुख्य धारा– इस घोषणा से जैन राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग नहीं हो रहे हैं, केवल अपना धर्म, शिक्षा व संस्कृति का संरक्षण अच्छी तरह से व विशिष्ट अधिकारों के साथ कर सकेंगे।

हिन्दू विधि– जहाँ तक कानून का प्रश्न है, जैनों पर हिन्दू विधि ही लागू रहेगी जैसे-

१. विवाह २. उत्तराधिकार ३. नाबालिग व उसकी संरक्षणता

(गार्जियनशिप) ४. गोद लेने व भरण-पोषण आदि के संबंध में। अल्पसंख्यक घोषित हो जाने से इनका प्रभाव समाप्त नहीं होगा। ऐसा स्पष्ट प्रावधान भारतीय संविधान व सन् १९५६ में पारित हिन्दू कानून में किया गया है।

१. हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा २(१)(ख)

२. हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा २ (१) (ख)

३. हिन्दू अवयस्कता और संरक्षता अधिनियम की धारा ३ (ख) एवं

४. हिन्दू दत्तक ग्रहण तथा भरण-पोषण अधिनियम की धारा २ (ख)

में उपर्युक्त चारों कानून में एक जैसी भाषा में निम्न प्रावधान हैं-

"यह अधिनियम लागू हैं- ऐसे किसी भी व्यक्ति को जो धर्मतः जैन हो।"

शंका निवारण

१. अल्पसंख्यक की घोषणा संविधान के अनुच्छेद २९ एवं ३० के तहत होती है।

२. अल्पसंख्यक न तो पिछड़े वर्ग (बेकवर्ड) न अनुसूचित जाति (शिड्यूल कास्ट) और न अनुसूचित जन जाति (शिड्युल ट्राइब) में गिने जाते हैं। उनके लिए अनुच्छेद १६ (४), १६(५), ३४०, ३४१ व ३४२ में प्रावधान हैं, न कि अनुच्छेद २९ व ३० में।

३. अल्पसंख्यक को नौकरियों में, विधानसभा में व लोकसभा में किसी भी प्रकार का आरक्षण प्राप्त नहीं है।

लाभ

अल्पसंख्यक घोषित होने का मुख्यतः सबसे अधिक लाभ जैन शिक्षण संस्थाओं को प्राप्त होगा। जैन शिक्षण संस्थाओं को निम्न लाभ होंगे-

जैन शिक्षण संस्थाएँ

१. अपना अलग अस्तित्व बनाए रख सकेंगी।

२. मैनेजमेन्ट (प्रबंध) पर जैनों का कन्ट्रोल (नियन्त्रण)रहेगा।

३. जैन विद्यार्थियों को प्राथमिकता से प्रवेश दिया जा सकेगा।

४. जैनों को नौकरी में प्राथमिकता दी जा सकेगी।

५. जैन धर्म की प्रार्थना/स्तुति की जा सकेगी।

६. जैन संस्कृति व दर्शन का समुचित प्रसार का विशेष अधिकार प्राप्त होगा।

अतिरिक्त लाभ

१. जैन अपना धर्म, शिक्षा, संस्कृति पुरातत्त्व आदि का संरक्षण अच्छी तरह से व विशिष्ट अधिकार के साथ कर सकेंगे।

२. राज्य अल्पसंख्यक आयोग में एक सदस्य "जैन" प्रतिनिधि मनोनीत होगा।

३. राज्य अल्पसंख्यक आयोग "जैनों के हितों" की रक्षा करेगा।

४. जैनियों के साथ यदि कोई भेदभाव करता है तो उसे दूर करने के उपाय किये जायेंगे।

५. जैनियों को कोई प्रताड़ित करता है तो अल्पसंख्यक के रूप में सरकार उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगी।

६. समाज कल्याण विभाग के परामर्श पर उद्योग विभाग विशेष रियायत पर ऋण उपलब्ध करायेगा।

७. अल्पसंख्यक वित्त निगम आर्थिक रूप से कमजोर जैन वर्ग को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करा सकेगा।

अल्पसंख्यक आयोग द्वारा किये जाने वाले कार्य

राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग, अधिनियम २००१ के अध्याय ३ धारा ९ के अनुसार अल्पसंख्यकों के लिए निम्नांकित कार्य कर सकेगा- १. उनके विकास की प्रगति का मूल्यांकन २. संविधान एवं काननू में प्रदत्त संरक्षण के कार्य की मानिटरिंग ३. उनके अधिकारों के हनन की शिकायतों की जाँच-पड़ताल ४. उनके विरुद्ध भेद किये जाने पर समस्या को दूर करने के उपाय ५. सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक विकास से संबंधित विषयों का अनुसंधान ६. उनके संबंध में केन्द्रीय सरकार व राज्य सरकारों को समुचित उपाय करने के सुझाव देना ७. उनकी कठिनाइयों व उनसे संबंधित विषयों पर सरकार को विशेष रिपोर्ट देना।

-आई.ए.एस. (से.नि.)
कार्यकारी अध्यक्ष, भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान
८५३-चौपासनी रोड़, जोधपुर (राज.)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

✯श्री धर्मचन्द जैन

प्र.३८ संसार में राशियाँ कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर संसार में दो प्रमुख राशियाँ हैं - १. जीव राशि और २. अजीव राशि। किसी अपेक्षा से जीव राशि को व्यवहार राशि तथा अव्यवहार राशि इन दो भेदों में भी बाँटा जा सकता है।

प्र.३६ अव्यवहार राशि के जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर जिन जीवों ने एक बार भी निगोद अर्थात् सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय को छोड़कर अन्य गति-जाति-कायादि में जन्म नहीं लिया है, उन्हें अव्यवहार राशि के जीव कहते हैं।

प्र.४० व्यवहार राशि के जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर जिन जीवों ने निगोद अर्थात् सूक्ष्म व साधारण वनस्पति काय को छोड़कर प्रत्येक काय में एक बार भी जन्म ले लिया है, उन्हें व्यवहार राशि के जीव कहते हैं।

प्र.४१ निगोद व निगोदिया में क्या अन्तर है ?

उत्तर सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय के जीवों को निगोदिया कहते हैं। निगोद के जीव दो प्रकार के होते हैं -१.सूक्ष्म और २. साधारण। सूक्ष्म वनस्पतिकाय के जीवों को सूक्ष्म साधारण भी कहते हैं। साधारण वनस्पतिकाय के जीवों को बादर साधारण भी कहते हैं। ये अनन्तकायिक ही होते हैं। अर्थात् एक औदारिक शरीर के आश्रित अनन्त जीव होते हैं। दूसरे शब्दों में निगोद, साधारण और अनन्तकायिक, ये तीनों समानार्थक भी कहे जा सकते हैं। क्योंकि इन तीनों में ही जीव के ४ भेद (५६३ जीवों की अपेक्षा से) पाये जाते हैं। निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर को निगोद कहते हैं। निगोदिया जीव अनन्त होते हैं, जबकि उनके औदारिक शरीर असंख्यात ही होते हैं। तैजस्, कार्मण शरीर अनन्त होते हैं, क्योंकि सभी निगोदिया जीवों के ये दोनों शरीर तो अलग-अलग ही होते हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकाय (सूक्ष्म साधारण) के जीव तो पूरे लोक में ठसाठस भरे हुए हैं। साधारण (बादर साधारण) वनस्पति में आलू, प्याज, लहसून, गाजर, मूला, रतालू आदि तथा लीलण-फूलण-काई आदि के जीव आते हैं।ये

पूरे लोक में न होकर लोक के एक भाग में होते है।

प्र.४२ प्रत्येक काय किसे कहते है?

उत्तर एक औदारिक शरीर में एक जीव रहे, उन्हें प्रत्येक काय के जीव कहते हैं। सूक्ष्म व साधारण वनस्पति काय के जीवों को छोड़कर शेष सभी संसारी जीव जैसे - पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, प्रत्येक वनस्पति, तीन विकलेन्द्रिय, तथा सन्नी-असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, नारकी, देवता, मनुष्य आदि प्रत्येक कायिक कहलाते हैं।

प्र.४३ क्या व्यवहार-अव्यवहार राशियों में भवी-अभवी दोनों प्रकार के जीव होते हैं ?

उत्तर हाँ, व्यवहार तथा अव्यवहार इन दोनों ही राशियों में भवी तथा अभवी ये दोनों प्रकार के जीव पाये जाते हैं। भवी जीव भी अनन्त होते है। तथा अभवी जीव भी अनन्त होते हैं। यद्यपि अभवी जीव, भवी के अनन्तवें भाग ही होते हैं जबकि भवी जीव, अभवी से अनन्त गुणे अधिक होते हैं।

प्र.४४ भवी-अभवी जीव किसे कहते है?

उत्तर जो भवों का अन्त कर मोक्ष को प्राप्त कर सके, उन जीवों को भवी कहते हैं। जो जीव कभी भी भवों का अन्त नही कर सकेंगे, मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, अनादि-अनन्त काल तक नरकादि चार गतियों में ही जन्म-मरण करते रहेंगे, उन्हें अभवी जीव कहते हैं।कोई जीव भवी है अथवा अभवी, इसका सही निर्णय तो केवलज्ञानी ही कर सकते हैं। किन्तु महापुरुषों के श्रीमुख से ऐसा सुना है कि जिसके अन्तर में मोक्ष-प्राप्ति की तीव्र भावना हो, जो पाप भीरू हो, जिसे अपने आपके बारे में यह जानने की प्रबल इच्छा हो कि मैं भवी हूँ अथवा अभवी, उसे भवी समझना चाहिये।

प्र.४५ अभवी मोक्ष क्यों नहीं प्राप्त कर सकते ?

उत्तर क्योंकि अभवी जीव मिथ्यात्व की दुर्भेद्य ग्रन्थि को तोड़ नहीं पाते अर्थात् उनके मिथ्यात्व नामक प्रथम गुणस्थान छूट नहीं पाता। जब मिथ्यात्व ही नहीं छूटता तो फिर आगे के गुणस्थानों को पाना व मोक्ष में जाना कैसे संभव है।

प्र.४६ क्या सभी भवी जीव मोक्ष में जाते हैं?

उत्तर यद्यपि यह बात सही है कि सभी भवी जीव अवश्य ही मोक्ष में जायेंगे। ऐसा संभव नहीं कि भवी जीव हो और वह मोक्ष प्राप्त न करें।

मोक्ष-प्राप्ति में समय अनन्त काल भी लग सकता है। कतिपय लोगों से ऐसा भी सुना जाता है कि सब भवी जीवों का मोक्ष जाना अनिवार्य नहीं है। जिन जीवों को ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना का अवसर मिलेगा वे ही मोक्ष जायेंगे, शेष नहीं। किन्तु उनका ऐसा कहना उपयुक्त नहीं लगता, क्योंकि पहले गुणस्थान में स्थिति की अपेक्षा से तीन भांगे (विकल्प) बतलाये, उनमें भवी जीव के अनादि सान्त व सादि सान्त, ये दो भंग भी बतलाये हैं, अनादि अनन्त का भंग नहीं बतलाया। इससे स्पष्ट है कि भवी जीव मिथ्यात्व का अन्त कर आगे के गुणस्थानों को प्राप्त करता हुआ एक दिन मोक्ष को भी अवश्य ही प्राप्त करता है। सभी भवी जीवों का मोक्ष में जाना भगवती सूत्र में वर्णित जयन्तीबाई के प्रश्न एवं भगवान महावीर द्वारा फरमाये गये उत्तरों से भी सिद्ध होता है।

प्र.४७ जब सभी भवी जीव मोक्ष में जायेंगे तो क्या ऐसी स्थिति भी आ सकेगी, जब यह लोक भवी जीवों से खाली (शून्य) हो जायेगा?

उत्तर यद्यपि सभी भवी जीव मोक्ष में जाते हैं, जायेंगे, किन्तु फिर भी यह लोक भवी जीवों से कभी भी रहित नहीं होगा। कारण कि जितने भी जीव मोक्ष में जाते हैं, तब उतने ही भवी जीव अव्यवहार राशि से निकलकर व्यवहार राशि (प्रत्येक काय) में आ जाते हैं। अव्यवहार राशि में अनन्तानन्त भवी जीव हैं। वे इतने अनन्तानन्त हैं कि अनन्त काल बीत जाने पर भी उनका कभी अन्त नहीं आता। इसे एक व्यावहारिक दृष्टान्त से भी समझा जा सकता है- काल के तीन भेद हैं-वर्तमान, भूत और भविष्यत्। अनादि काल से यह क्रम चल रहा है कि भविष्यत् काल वर्तमान में आता है, वर्तमान में एक समय रहता है और दूसरे ही समय में भूतकाल में चला जाता है। अनादिकाल हो जाने पर भी भविष्यत् काल का अन्त नहीं हुआ।अनन्त-अनन्त काल बीत जाने पर भी भविष्यत्-वर्तमान और भूतकाल का क्रम कभी भी समाप्त नहीं होगा।भूतकाल,भविष्यत् काल में नहीं जाता, फिर भी ऐसा समय कभी नहीं आता कि भविष्यत काल, वर्तमानकाल और भूतकाल न रहे। अर्थात् ये तीनों ही शाश्वत हैं । ठीक इसी प्रकार अव्यवहार राशि के भवी जीवों का भी कभी अन्त नहीं होता। अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में उन जीवों का आना कभी समाप्त ही नहीं होता।

प्र.४८ जितने जीव मोक्ष में जाते हैं उतने ही भवी जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आते ही हैं, इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर कर्म साहित्य के विवेचक विशेषणवती ग्रन्थ की ६०वीं गाथा में स्पष्ट उल्लेख है कि जितने जीव मोक्ष में जाते हैं, अव्यवहार राशि से उतने ही भवी जीव व्यवहार राशि में आते हैं। गाथा इस प्रकार है-

सिज्झंति जत्तिया किर, इह संववहार जीव रासिओ।
एंति अणाइ-वणस्सई, रासीओ तेत्तिया तम्मि।। विशेषणवती १५/६०

-रजिस्ट्रार,
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

माटी हैं पीपाड़ की चन्दन

(तर्ज- चांदी की दीवार....)

माटी है पीपाड़ की चन्दन, जन्मे दो-दो रघुनन्दन।
करते हैं हम सब अभिनन्दन, स्वीकारो गुरुवर वन्दन।।

हस्ती की मस्ती का आलम, कोई समझ नहीं पाया था,
मौत का सुना मृदंग सोजत में, जाऊँ निमाज फरमाया था।
तेले पर संथारा क्या था-2, प्रभु से प्रभु का था ये मिलन।।

विनय भावना सद्गुण सौरभ, बना आंख का तारा है,
माँ मोहनी की कोख का हीरा, मोती जी का प्यारा है,।
हस्ती का ये पट्टधर हीरा, करता है, आलम रंजन।।

व्याख्यान की अद्भुत शैली, मोटाई का मोड़ नहीं,
शास्त्र ज्ञान और फक्कड़ पन में, इनकी कोई होड़ नहीं।
सौम्य शांत मन सदा सरल है, चेहरे पर रहती निखरन।।

दृढ़ता मानों हिमालय जैसी, सागर सम गांभीर्य भरा,
भानु जैसा तेज प्रबल है, वसुधा का सा सौहार्द खरा।
मस्तक में प्रभु स्वयं बिराजे, वाणी में सरस्वती रमण।।

व्यसन मुक्ति है मिशन आपका, फैशन पर सचोट प्रहार,
सामायिक स्वाध्याय ही लाता, जीवन में आनन्द फुहार।.
'कमला मधुर' की यही चाह है, सबके मन कर दो कुन्दन।।

प्रस्तुतकर्ता- जवाहरलाल बाघमार, चेन्नई

जन्म से मृत्यु तक की यात्रा

श्री नेमीचन्द जैन

१. ***जन्म व बचपन-*** माँ के पेट में गर्भावास का दुःख देखा। औंधा पड़ा रहा। वचन देकर बाहर आया, किन्तु 'निसरिया ने विसरिया' बचपन के दिन खेलकूद में खो दिये।

२. ***जवानी-*** जवानी आई। ऐशो आराम मौज-मस्ती, रंग-राग में जवानी के मोती भी लुट गये।

"भरी जवानी पइसो पल्ले राम चलावे तो सीधो चाले।"

३. ***बुढ़ापा-*** जवानी के दिन ढ़ले, बुढ़ापे ने दस्तक दी। बुढ़ापे में किस प्रकार का अपमानित जीवन जीना पड़ता है-

थारी परणी छोड्यो हेत, छोड़ी थारी अद रे।
थारा बेटा बोले बोल, मरेला कद रे।।

बुढ़ापे में शरीर किस तरह लाचार हो जाता है-

श्वास श्वास हाय हाय में, तप जप होवे नांय।
मुख से प्रभु का नाम न निकले, मन की रह जासी मन मांय।।
वेला तो आई तोरण री.....

४. ***बुढ़ापे की एक झलक-*** दांत गिर गये। आंतें कमजोर हो गईं। गोड़ों ने जवाब दे दिया। देखने-सुनने की शक्ति क्षीण हो गई। पेट में जगह नहीं, मन फिर भी खाऊँ-खाऊँ करता है। अन्दर विचार और है, बाहर व्यवहार में कुछ और। पुत्रवधू को पुत्री का सा प्यार नहीं। पुत्रों पर समान नजर नहीं। उनमें धन का बँटवारा बराबर नहीं, समय पर नहीं। लोगों के आगे पुत्र और पुत्रवधुओं की आलोचना करने से थकता नहीं। उनको बचपन से सुसंस्कार देने की फुर्सत नहीं। अड़ियल स्वभाव छोड़ता नहीं। किसी की नेक सलाह मानता नहीं। परिवार के सदस्यों को विश्वास में लेता नहीं, चुपके से लेनदेन करने की प्रवृत्ति जाती नहीं। पंच पंचायती छोड़ता नहीं । बात-बात में क्रोध आता है। क्षण-क्षण में घड़ी में समय पूछता है। मिनट-मिनट में सामने वाले व्यक्ति का नाम पूछता है। मौका लगे तो झूठ बोलने से बाज नहीं आता। जबान चुप रहती नहीं। वाणी में मिठास नहीं। साधन होते हुए भी मैला कुचैला तथा गंदा रहता है। जीव-रक्षा का विवेक नहीं। प्रभु भजन सामायिक-स्वाध्याय में मन लगता नहीं। शारीरिक वेदना में धीरज नहीं।

आत्मन्! शांति समता गई खुट रे।
फिर बता बुढ़ापा कैसे सुधरे।।

५. ***मृत्यु-*** बुढ़ापे में हाय-हाय करते मौत का हलकारा आ पहुँचा।

हुकम मौत का जब आवे, बंगला खाली तुरंत करावे।
कहे चौथमल भजो भगवान, मिला तन बंगला आलीशान।।

डोली को तुरन्त उठा लिया गया। काठ की घोड़ी पर चढ़कर शरीर श्मशान पहुँच गया। आग की लपटों में शरीर स्वाहा हो गया। माटी का बना शरीर माटी में मिल गया। जन्म के समय करोड़ गुणी वेदना, मृत्यु के समय अनंत वेदना। बीच के समय में भी सुख कहाँ?

६. ***चेतावनी-*** संत कबीर जगाते हुए कहते हैं-

घणा दिन सो रयो रे, मुसाफिर जाग सके तो जाग।
पहले सोयो मात गर्भ में, उल्टे पांव पंसार।
कोल वचन कर बाहर आयो, भूल गयो करतार।।
जन्म थारो होय गयो रहे। मुसाफिर.......
दूजो सोयो मात गोद में, हंस-हंस दांत दिखाय।
बहन भाणजी नूत जिमावे, हो रयो मंगलाचार।।
लाड़ थारो हो रयो रे। मुसाफिर........
तीजो सोयो तिरिया संग में, गल बीच बांहा डाल।
जोवन पचीसा होय गयो रे, फंस गयो मोहा जाल।।
विवाह थारो हो गयो रे। मुसाफिर.......
चौथो सोयो श्मशान में, सीधा पांव पसार।
कहत कुबीर सुणो भाई साधो, दियो अग्नि में डार।
दाग थारो हो गयो रे। मुसाफिर.....

७. ***गौतम बुद्ध और बुढ़ापा-*** राजकुमार गौतम ने एक दिन जर्जर शरीर वाले बूढ़े व्यक्ति को लाठी के सहारे लड़खड़ा कर चलते हुए देखा। राजसेवकों ने बताया कि जवानी के दिनों में जब यह वृद्ध पुरुष चलता था तब धरती धूजती थी, लेकिन अब इसको बुढ़ापे ने घेर लिया। राजकुमार को समझते हुए देर नहीं लगी कि वे भी बुढ़ापे की गिरफ्त में आ सकते हैं। "देखी मैंने आज जरा, क्या हो जायेगी ऐसी ही मेरी यशोधरा।" गौतम जाग उठे। महाभिनिष्क्रमण कर साधु बन गये। आगे जाकर गौतम बुद्ध के नाम

से विख्यात हुए।

८. ***प्रेरणा-*** आत्मन्! जाग , उठ, कदम भर, मंजिल तेरा इंतजार कर रही है।

-प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अरठियाकलां

फुर्सत का उपयोग

श्री दिलीप धींग

जीवन की व्यस्तताओं में फुर्सत दुर्लभ हो गई है। इसलिए जब भी फुर्सत मिले, उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में होना चाहिये। रोजमर्रा की जिन्दगी से हटकर जीवन में कितने ही ऐसे कार्य और इच्छाएँ होती हैं, जिनकी उपयोगिता अपरम्पार होती है। परन्तु उन महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए समय का नियोजन नहीं हो पाता है। जीवन को बेहतर बनाने वाले कार्य करके फुर्सत के क्षणों को सार्थक किया जाना चाहिए।

जीवन के अच्छे शौक, श्रेष्ठ मित्र, आत्मीय परिजन और गुणीजन फुर्सत के क्षणों को स्वर्ण-कणों की मानिन्द बहुमूल्य और चमकीला बना सकते हैं। फुर्सत के क्षणों में करने योग्य अनेक कार्य हो सकते हैं। यथा- स्वाध्याय यानी अच्छी पुस्तकें पढ़ना, प्रतिलेखना यानी यतनापूर्वक घर की और घर में रखी हुई वस्तुओं की साफ-सफाई करना, अच्छे लोगों से मेल-मिलाप बढ़ाना, परिवार और समाज को समय देना, नया ज्ञान सीखना-सिखाना, सेवा कार्यों में हाथ बंटाना आदि। वस्तुतः कितने ही कार्य तो ऐसे होते हैं, जिनके लिए फुर्सत की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये। उन्हें जीवन में नियमित स्थान देना चाहिये। इन सबके लिये फुर्सत के क्षणों के दुरुपयोग से बचना नितान्त आवश्यक है। गप्पे हांकना, ताश खेलना, गंदा साहित्य पढ़ना, अत्यधिक टी.वी. देखना या टी.वी. पर उद्देश्यहीन कार्यक्रम देखना, वीडियो/कम्प्यूटर गेम खेलना, जुआ/ सट्टा खेलना आदि कार्य जीवन के अमूल्य क्षणों को बर्बाद कर देते हैं।

जीवन के लक्ष्य को सदैव ध्यान में रखें। उसे नित नये आयाम और ऊँचाइयाँ देने के लिये निरन्तर प्रयास करें। महापुरुषों को अपना आदर्श बनाएँ, उनकी जीवनियाँ पढ़ें तथा उनके द्वारा बताए गए सन्मार्ग पर विवेकपूर्वक चलने के लिए यत्नशील रहें। समय-प्रबन्धन से जीवन के हर पल का सार्थक उपयोग किया जा सकता है। जीवन में करने योग्य कार्य भी व्यक्ति भली-भांति कर नहीं पाता है, फिर नहीं करने योग्य कार्यों के लिए समय कहाँ?

-बम्बोरा, उदयपुर (राज.)

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह(तृतीय भाग) :-***संग्रहकर्ता***- *भैरोंदान सेठिया* ***प्रकाशक***-*अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर-334005, फोन नं. 0151-2543516,* ***पृष्ठ***-*36+384,* ***मूल्य***-*75 रुपये, तृतीय संस्करण 2003*

'जैन सिद्धान्त बोल संग्रह' के दो भागों के पश्चात् यह तीसरा भाग भी अब सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था द्वारा पुनः उपलब्ध करा दिया गया है। इस भाग में संख्या ८, ९ एवं १० के २०७ बोलों का संग्रह है। जैनागमों में वर्णित विषय वस्तु को संख्या-क्रम की दृष्टि से एकत्र कर एक स्थान पर उपलब्ध कराने की दृष्टि से 'जैन सिद्धान्त बोल संग्रह' ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है। कोश शैली में रचित 'जैन सिद्धान्त बोल संग्रह' के कुल आठ भाग हैं, जो सभी पुनः प्रकाशन योजना के अधीन हैं।

Atmasiddhi:-*Adhyatma Geeta and Atmopanishad* **English Translatiobn with Commetary-** *Manu Doshi,* **Publisher-** *Shri Satshrut Seva Sadhana Kendra, Shrimad Rajchandra Adhyatmik Sadhana Kendra, KOBA Dist. Gandhinagar, Gujrat-382007,* **Pages-***275,* **Rs.-***60/-, Us $ 2, June 2003*

श्रीमद् राजचन्द्र एक आत्म-साधक महापुरुष थे। महात्मा गांधी भी उनसे प्रभावित रहे। श्रीमद् राजचन्द द्वारा रचित 'आत्मसिद्धि' ग्रन्थ का पठन देश-विदेश में किया जाता है। आत्मसिद्धि की रचना १४२ पद्यों में गुजराती भाषा में हुई थी। श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में मनु दोशी (Lake Forest, USA) द्वारा अंग्रेजी अनुवाद एवं विवेचन किया गया है जो सुग्राह्य है एवं तात्त्विक रहस्य को प्रकट करने में समर्थ है।

श्रद्धा-बीज:-*आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.,* ***प्रकाशक***- *श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर- 313001, फोन नं. 0294-2413518,* ***पृष्ठ***-*8+112,* *मूल्य-30 रुपये,* ***सन्*** *2003*

बंकचूल के चरित्र पर आधारित यह उपन्यास कुसंगति के दुष्परिणाम एवं सुसंगति के सुपरिणाम का चित्रण करता है। राजकुमार बंकचूल चोरी, शराब, वेश्यागमन आदि दुर्व्यसनों में पड़कर अपने जीवन को बर्बाद कर रहा था, वहाँ संतों से चार नियम स्वीकार कर वह अपना सम्पूर्ण जीवन बदल लेता है। उसका चौर्यकर्म भी छूट जाता है तथा अन्त में वह सौधर्म देवलोक में देव बनता है। उपन्यास का प्रकाशन आर्ट पेपर पर रोचक शैली में हुआ है।

समाचार-संकलन

श्रद्धेय आचार्यप्रवर का चातुर्मास समापन की ओर एक वर्ष में ७७ आजीवन शीलव्रती

इचलकरंजी—परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य **श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ तथा **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा ७ का इचलकरंजी चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप एवं साधना-आराधना की दृष्टि से सफलतापूर्वक समापन की ओर अग्रसर हो रहा है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्री कपिलमुनि जी म.सा. के सामयिक प्रेरक प्रवचनामृत का पान कर आबाल-वृद्ध सभी अपने आपको सौभाग्यशाली समझ रहे हैं वहीं वे आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की ज्ञान-क्रिया में रमणता, कथनी- करनी में एकरूपता और संयम-साधना में जागरूकता देखकर प्रभावित हैं। सत्संग-सेवा और संत-समागम में सुयोग से इचलकरंजी में शासन की महती प्रभावना हुई है जिसका सार-संक्षेप इस प्रकार है-

तपाराधन- चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तप साधना में आबाल-वृद्ध सबने भावनापूर्वक पुरुषार्थ प्रदर्शित किया। फलस्वरूप पूरे चातुर्मास में नित्यप्रति उपवास, एकाशन, आयंबिल के निरन्तर प्रत्याख्यान हुए, वहीं बड़ी तपश्चर्याओं में भी कमी नहीं रही। सुश्रावक श्री रूपचन्द जी कटारिया, जलगांव ने पैंतीस दिवसीय तप साधना की, वहीं सुश्रावक श्री उदयराज जी नाहर, कोसाना ने मासखमण तप के अलावा बारह दिवसीय तप-साधना की। सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी बरड़िया, जयसिंगपुर ने मासखमण तप किया, वहीं इचलकरंजी की बहिनों में सौ. वर्षा अनिल जी बोहरा, सौ. सुनीता गौतमचन्द जी सुराना, सौ. लाडकंवर अजीत जी खाबिया, सौ. प्रेमलता श्रीचन्द जी बम्ब, सौ. सुरेखा अशोक जी बोहरा, सौ. वर्षा जितेन्द्र जी बोहरा, सौ. पद्मा कांतिलाल जी चोरड़िया ने मासखमण तप की साधना की।

चातुर्मास के प्रारम्भ से आयंबिल की लड़ी का शुभारंभ हुआ जिसे चातुर्मास पश्चात् भी निरन्तर गतिमान बनाए रखने का संकल्प किया गया। श्रावण और भाद्रपद में तेले की लड़ी का अनुष्ठान चला। दया-संवर की पचरंगियों-नवरंगियों के कई सफल आयोजन हुए। सामूहिक दयाव्रत में सबका उत्साह प्रशंसनीय रहा।

दस मासखमण के अतिरिक्त अठारह की एक, पन्द्रह की पाँच, तेरह की एक, बारह की दो, ग्यारह की बारह तथा नौ दिवस की ग्यारह तपस्याएँ हुई। पचास

से अधिक अठाइयों के अलावा उपवास-बेले-तेले-पांच की सैंकड़ों तपश्चर्याएँ उत्साहपूर्वक हुई। आयंबिल, एकाशन, नीवी, दया, संवर-पौषध की आराधना में आबाल-वृद्ध सबने भावनापूर्वक लाभ उठाया। श्रीमती पुष्पा सोहनलाल जी कोठारी, श्रीमती निर्मला नवीनकुमार जी पुनमिया और श्रीमती रजनी बिरदीचन्द जी चौपड़ा ने सिद्धि तप किया।

शीलव्रत के खंद- तपों में सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मचर्य तप है, आचार्यप्रवर की प्रेरणा से एक वर्ष में ७७ शीलव्रत के खंद हुए हैं जिनकी सूची इस प्रकार है-

०१. श्री बाबूलाल जी मेहता, सी.पी. टैंक, मुम्बई
०२. श्री खेमचन्द जी कोठारी, कांदीवली, मुम्बई
०३. श्री मदनलाल जी नाहर, अंधेरी ईस्ट, मुम्बई
०४. श्री चांदमल जी कर्णावट, मूलजी नगर, मुम्बई
०५. श्री मोहनलाल जी कर्णावट, सावटा, डहाणु
०६. श्री सुगनचन्द जी नाहर, सावटा, डहाणु
०७. श्री सुखराज जी नाहर, सावटा, डहाणु
०८. श्री इन्दरचन्द जी बोथरा, डहाणु रोड
०९. श्री भाग्यचन्द जी कर्णावट, डहाणु गांव
१०. श्री चन्द्रराज जी बोथरा, डहाणु गांव
११. श्री सुमेरमल जी बोथरा, डहाणु गांव
१२. श्री जवरीलाल जी कर्णावट, डहाणु गांव
१३. श्री लालचन्द जी कर्णावट, डहाणु गांव
१४. श्री ईश्वरलाल जी चोरड़िया, डहाणु गांव
१५. श्री गुलाबचन्द जी बोहरा, अहमदनगर
१६. श्री मोतीलाल जी बोथरा, डहाणु रोड
१७. श्री विजयराज जी मुथा, उमरगांव रोड
१८. श्री सज्जनराज जी सिंघवी, भीलाड़
१९. श्री चन्द्रसागर जैन, नवसारी
२०. श्री महेन्द्रभाई मेहता, नवसारी
२१. श्री मांगीलाल जी सेठिया, बालोतरा
२२. श्री विजयराजजी खींवसरा, मांडल
२३. श्री कन्हैयालाल जी बोथरा, डहाणु गांव
२४. श्री माणकमल जी भंडारी, सूरत
२५. श्री अशोक जी मेहता, सूरत
२६. श्री गणपतजी ललवाणी, सूरत रांदेर
२७. श्री नवरतन जी ललवाणी, सूरत रांदेर
२८. श्री घमंडीराम जी सालेचा, भीलाड़
२९. श्री रसिक भाई जी शाह, बोर्डी
३०. श्री भीकमचन्द जी लूंकड़, बोर्डी
३१. श्री भंवरलाल जी कुंभट, नाशिक
३२. श्री चन्द्रकान्त जी मुणोत, पनवेल
३३. श्री पन्नालाल जी बांठिया, पनवेल
३४. श्री मनसुखलाल जी गुगलिया, लौणाब्रह्मा
३५. श्री केवलचन्द जी बोरा, बैंगलोर
३६. श्री माणकचन्द जी गांधी, बैंगलोर
३७. श्री गणपतलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
३८. श्री प्यारेलाल जी गुगलिया, हैदराबाद
३९. श्री श्रवणलाल जी जैन, गंगापुर
४०. श्री राजेन्द्र जी मेहता, मुम्बई
४१. श्री अभयराजजी मेहता, चेन्नई
४२. श्री मनोहरराज जी कांकरिया, चेन्नई
४३. श्री कान्तिलाल जी लोढ़ा, पूना
४४. श्री किशनलाल जी ओस्तवाल, पूना
४५. श्री लिखमीचन्द जी ओस्तवाल, पूना
४६. श्री शांतिलाल जी ओस्तवाल, पूना
४७. श्री जवाहरलाल जी मूथा, पूना
४८. श्री बिरदीचन्द जी नवलखा, सासवड़
४९. श्री धनराज जी मुणोत, सतारा
५०. श्री शांतिलाल जी लुणावत, सतारा
५१. श्री रिखबचन्द जी सुराणा, बल्लारी
५२. श्री पुखराजजी दुग्गड़, तासगांव
५३. श्री कांतिलाल जी भंडारी, इचलकरंजी
५४. श्री रिखबचन्द जी बम्ब, बिलीपुरं
५५. श्री नेमीचन्द जी संचेती, इचलकरंजी
५६. श्री सोहनलाल जी खींवसरा, इचलकरंजी

५७. श्री मिश्रीलाल जी गांधी, इचलकरंजी
५८. श्री पारसमल जी बोरा, इचलकरंजी
५९. श्री बसंत जी कोठारी, इचलकरंजी
६०. श्री जवरीमल जी आबड़, चेन्नई
६१. श्री श्रीचन्द जी बम्ब, इचलकरंजी
६२. श्री बिरदीचन्द जी चौपड़ा, इचलकरंजी
६३. श्री चंपालाल जी गांधी, इचलकरंजी
६४. श्री भीकमचन्द जी चतुरमुथा, देऊर
६५. श्री पारसमल जी कोठारी, बैंगलोर
६६. श्री अमृतलाल जी मुणोत, इचलकरंजी
६७. श्री संपतराजजी लुणावत, चिंचवड़
६८. श्री पोपटलाल जी नाहर, चिंचवड़
६९. श्री गौतमराज जी गांग(मेहता), जोधपुर
७०. श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, चेन्नई
७१. श्री कुशलचन्द जी खींवसरा, जयपुर
७२. श्री महावीर जी जरगड़, जयपुर
७३. श्री पदमचन्द जी मेहता, इचलकरंजी
७४. श्री कांतिलाल जी गुन्देचा, हैदराबाद
७५. श्री रिखबचन्द जी जैन, गंगापुर सिटी,
७६. श्री दुलीचन्द जी मुणोत, इचलकरंजी
७७. श्री बींजराज जी भंसाली, इचलकरंजी

संस्कार निर्माण– बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण हेतु प्रत्येक शनिवार और रविवार को शिविर आयोजित किए गये, जिनमें सामायिक, प्रतिक्रमण, देव-गुरु-धर्म का स्वरूप समझाया गया।

जाप– विशिष्ट पर्व दिवसों पर नवकार मंत्र का जाप किया गया। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर अखण्ड नमस्कार मंत्र का जाप भावनापूर्वक हुआ।

ज्ञान-ध्यान– आचार्यप्रवर के चातुर्मास के सुयोग से श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों और बालक-बालिकाओं ने न केवल सामायिक-प्रतिक्रमण और बोल-थोकड़ों का अभ्यास किया, अपितु सामायिक-स्वाध्याय के प्रति उनका लगाव बना। अनेक भाई-बहिनों ने नित्यप्रति सामायिक-स्वाध्याय का नियम लिया है जो ज्ञान को आचरण में लाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा।

दर्शनार्थी– चातुर्मास मंगलप्रवेश से अब तक दर्शनार्थी श्री संघ व श्रद्धालुओं का आवागमन निरन्तर बना रहा। आगत श्री संघों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा का लाभ तो लिया ही, व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर अपने जीवन को उन्नत बनाने की दिशा में भावना प्रदर्शित की, जो वस्तुतः अनुकरणीय है। हुबली, बेलगांव, रत्नागिरी, कोयम्बतूर, गदग, होसपेट, कोल्हापुर, सांगली, गंगावती, सोरापुर, हिरिपुर, सौदेत्ती, सिंधनूर, लछमेश्वर, गुलेजगढ़ श्री संघों ने आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में अपने-अपने क्षेत्र की भावपूर्ण विनतियां रखते हुए क्षेत्र फरसने का निवेदन किया। चैन्नई, बैंगलोर, मैसूर, बल्लारी, बीजापुर, हैदराबाद, जबलपुर, सतारा, जलगांव श्री संघों ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में आगामी चातुर्मास की भावपूर्ण विनतियाँ रखी। चेन्नई, बैंगलोर, सतारा, बल्लारी, हैदराबाद श्रीसंघों ने कई बार अपने-अपने क्षेत्र की चातुर्मास की विनतियाँ दोहराई। बालोतरा, जयपुर, पीपाड़ श्रीसंघों ने आचार्यप्रवर की सेवा में उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास की विनतियाँ रखी। आलनपुर, साकरी, दूदू, भरतपुर श्रीसंघों ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में महासती-मण्डल के चातुर्मास हेतु विनतियां रखी। निकट भविष्य में होने वाली दीक्षा के लिए

बीजापुर संघाध्यक्ष श्री नेमीचन्द जी रूणवाल और संघ मंत्री श्री धर्मचन्द जी भण्डारी ने यह अवसर बीजापुर संघ को देने की प्रार्थना प्रस्तुत की। चेन्नई- बैंगलोर की पुनः पुनः विनतियों में प्रायः शीर्ष श्रावकों ने कुछ दिन रहकर अपनी भावना तो रखी ही, चातुर्मास के सुयोग से धर्म-साधना के कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत कर दक्षिण में पधारने का पुनः पुनः निवेदन किया। चेन्नई के श्री गौतमचन्द जी सुराणा, श्री पी. एम.चारेड़िया, श्री गौतम जी हुण्डीवाल, श्री शिखरचन्द जी सुराना, श्री मंगलचन्द जी भंसाली द्वारा चेन्नई पधारने की पुनः पुनः विनती रही तो बैंगलोर के श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्री गणेशमल जी भण्डारी, श्री गौतम जी ओस्तवाल, श्री महावीर जी रूणवाल आदि श्रावकों की विशेष विनतियाँ चल रही हैं। मैसूर के श्री विमलचन्द जी धोका ने मैसूर पधारने और चातुर्मास करने की विनती रखी। मारवाड़-मेवाड़-पल्लीवाल-पोरवाल, अजमेर-मेरवाड़ा के श्रद्धालुओं ने स्वास्थ्य समाधि के लिए राजस्थान की उपयुक्तता बताते हुए राजस्थान पधारने का निवेदन किया।

आचार्यप्रवर ने श्री संघों व श्रद्धालुओं की विनतियों के उत्तर में सदा यही भाव व्यक्त किए हैं-देखिये क्या फरसना बनती है। आचार्यप्रवर अपनी ओर से विहार दिशा का कोई संकेत तक नहीं फरमा रहे हैं।

व्यसन मुक्ति-आचार्यप्रवर अपने प्रेरक प्रवचन में व्यसन विपत्ति का घर है खुलकर व्यसन के दुष्परिणाम बताते हैं वहीं बातचीत में व्यसन और फैशन से दूर रहने की प्रेरणा करते हैं। आचार्यप्रवर आदि संतसतीवृन्द के प्रयास से अनेक लोगों ने व्यसन को तिलांजलि दी है जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है।

चातुर्मास की व्यवस्था- इचलकरंजी का महावीर भवन विशाल भवन है जहाँ नीचे बड़ा प्रवचन हॉल है, ऊपर चारों ओर बड़ी बालकोनियां हैं जहाँ श्रावक-श्राविकाएँ बैठ कर प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त करते हैं। स्थान की अनुकूलता से धर्म साधना सुलभता से होती है। शास्त्र वाचन, प्रश्नचर्चा और ज्ञान-ध्यान सीखने में चाहे जितनी संख्या में लोग उपस्थित हों उन्हें समुचित स्थान प्राप्त होने से बैठने का मन रहता है।

इचलकरंजी श्री संघ श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र है अतः धर्म-साधना के साथ स्वधर्मी सेवा में संघ सदस्यों की सक्रियता अनुकरणीय है।

आचार्यप्रवर के इचलकरंजी चातुर्मास से महाराष्ट्र-कर्नाटक के समीपवर्ती ग्राम-नगरों में शुद्ध साध्वाचार का स्वरूप जानने-समझने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ वहीं श्रावक-श्राविकाओं को यह संकेत भी मिल गया कि आडम्बर विहीन साधना से मन को सुकून मिलता है तो शासन की प्रभावना भी होती है।

आचार्यप्रवर के श्रावण-भाद्रपद में मौसम के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहा, परन्तु श्रमणोचित औषधोपचार एवं पथ्य-परहेज से स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक है। कार्तिक शुक्ला १५ चातुर्मासिक पक्खी पश्चात् विहार-दिशा की

जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

उपाध्यायप्रवर एवं महासती मण्डल के यशस्वी चातुर्मास

जोधपुर–आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ तथा **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा ३ के घोड़ों का चौक स्थानक, **शासन- प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** आदि ठाणा ३ के पावटा स्थित वर्द्धमान भवन तथा **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ के सरस्वती नगर चातुमार्स से सूर्यगनरी जोधपुर में ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन में आबाल-वृद्ध सबका अच्छा उत्साह बना हुआ है।

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के स्वर्ग-गमन पश्चात् वि.सं. २०४८ में आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों का घोड़ों का चौक चातुर्मास हुआ। बारह वर्ष के लम्बे अन्तराल पश्चात् उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास का सुयोग पाकर जोधपुरवासी अपने-आपको सौभाग्यशाली समझ रहे हैं।

उपाध्यायप्रवर की निर्मल संयम-साधना से प्रभावित श्रावक-श्राविकाओं में श्रद्धाभक्ति और सेवाभावना के साथ ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना के प्रति रुचि व भावना का संचरण हुआ वह अनवरत रूप से उत्तरोत्तर वृद्धिगत हो रहा है। प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, तत्त्व चर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम के साथ पर्व तिथियों पर दया-संवर, उपवास-पौषध एवं विशिष्ट प्रसंगों पर व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर जीवन को समुन्नत करने में श्रावक-श्राविकाओं की सजगता अनुकरणीय है।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के साथ घोड़ों का चौक में अनवरत ज्ञान-गंगा प्रवाहित हो रही है। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. सुखविपाक सूत्र के माध्यम से सुखे-सुखे मोक्ष जाने वाली चारित्रात्मओं का विवेचन इस युक्ति से प्रस्तुत करते हैं जिससे श्रोताओं को आचार धर्म की सहज शिक्षा प्राप्त हो रही है। परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर विविध सामयिक विषयों के अलावा आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जीं म.सा. द्वारा रचित जैन आचार्य चरितावली के माध्यम से श्रमण भगवान महावीर के पश्चात् जैनाचार्यों का चरित्र प्रस्तुत कर श्रमण परम्परा का बोध करवा रहे हैं। उपाध्यायप्रवर के कषाय विजय, श्रावकों का संघ के प्रति दायित्व बोध, पर्वाधिराज पर्युषण पर्व, नवपद आराधना, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, ज्ञान पंचमी जैसे पावन प्रसंगों पर विशेष प्रभावी प्रवचन हुए हैं। यदा-कदा श्री यशवन्तमुनि जी म.सा., महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. एवं पावटा से पधारने वाली महासती

श्री विनीतप्रभा जी म.सा. को प्रवचन फरमाने का अवसर प्राप्त होता रहा है। रविवारीय प्रवचन में बालक-बालिकाओं के संस्कार निर्माण की दृष्टि से बच्चों को आगे स्थान सुलभ करवाकर उनमें देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा भाव भरने का विशेष कार्यक्रम चल रहा है। दीपावली पर आतिशबाजी नहीं कराने की प्रेरणा से करीब ८०० से १००० बालक-बालिकाओं ने प्रतिज्ञाबद्ध होकर पटाखे नहीं छोड़ने का संकल्प किया, वह वस्तुतः अनुकरणीय है। कषाय विजय की प्रेरणा एवं प्रवचन के पश्चात् मांगलिक के समय नित्यप्रति नियम कराने से क्रोध नहीं करने के संदर्भ में एक वातावरण बना है। चातुर्मास के प्रारम्भ में रात्रि भोजन त्याग की प्रेरणा से सैकड़ों भाई-बहिनों ने दो माह और चार माह रात्रि भोजन नहीं करने का नियम अंगीकार किया है।

उपाध्यायप्रवर संख्या के बजाय व्रत-नियम पर विशेष बल देते हैं। "सुनने का सार आचरण से झलके" इस प्रेरणा का प्रभाव नित्य-प्रति व्रत-नियमों से स्पष्ट झलकता है।

त्याग-तप- सत्संग-सेवा और संत-समागम के सुयोग से चातुर्मास में त्याग-तप होता ही है, लेकिन उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास से अन्यान्य वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष तपस्या के क्षेत्र में विशेष प्रत्याख्यान हुए है। ४१ दिवसीय तपस्या के अलावा दस मासखमण, पन्द्रह या पन्द्रह से अधिक सत्रह तपस्या, सौ से ऊपर अठाइयां और अनगिनत उपवास-बेले-तेले-पाँच की तपस्या पूरे चातुर्मास चलीं। एक बहिन ने सिद्धि तप किया तो एक बहिन ने लगातार ६१ दिन तक आयंबिल की आराधना की। चार बहिनों ने दो माह तक बेले-बेले की तपश्चर्या की। श्रावकों में धर्मचक्र चातुर्मास के प्रारम्भ में हुआ तो बहिनों ने दो अलग धर्मचक्र किये। श्रावकों में दो पचरंगी हुई तो बहिनों में चार। श्रावकों में दो नवरंगी हुई तो बहिनों में तीन।

उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से चौदह दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद किए हैं।

साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. के यहाँ घोड़ों का चौक में, **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** के यहाँ पावटा में और **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** के यहाँ सरस्वती नगर में बालिकाओं ने, बहुओं ने और प्रौढ़ श्राविकाओं ने ज्ञान-ध्यान सीखने, जप-तप करने सामायिक- प्रतिक्रमण और संवर-पौषध में अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। पावटा में प्रातः श्रावक-श्राविकाएँ शासनप्रभाविका जी म.सा. से शास्त्र श्रवण में भावनापूर्वक निरन्तर भागीदारी प्रदर्शित कर रहे हैं। पावटा में पर्युषण पर्व पर शासनप्रभाविका जी म.सा. के प्रवचन में भी विशाल जनमेदिनी रही। उपाध्यायप्रवर ने पर्वाधिराज पर्युषण पर सबको समीप में प्रवचन श्रवण का लाभ मिले इस भावना से मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. को

नेहरू पार्क भेजा, जहाँ भी विशाल जनमेदिनी ने पर्वाधिराज पर्युषणपर्व की मंगल आराधना अपूर्व उल्लास से की। सरस्वती नगर में सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. का चातुर्मास होने से जोधपुर के उपनगर में पूरे चातुर्मास जिनवाणी श्रवण का लाभ तों मिला ही व्रत-प्रत्याख्यानों में भी उस क्षेत्र ने अपना कीर्तिमान बनाया। श्रीमती रेशमी बाई धर्मपत्नी सुश्रावक श्री इन्द्रचन्द जी देसरला ने ४१ दिवसीय तप साधना सरस्वती नगर में की जिसका ५ अगस्त को पूर सम्पन्न हुआ।

घोड़ों का चौक, पावटा, सरस्वती नगर में नित्यप्रति संवर-पौषध की साधना के साथ जप-तप के कार्यक्रम व्यवस्थित चल रहे हैं।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास में समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों का एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन पूरे चातुर्मास बना रहा। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान कार्यक्रम जो १३ व १४ सितम्बर को जोधपुर में रखे गये, द्विदिवसीय कार्यक्रम पर देशभर से पधारे श्रावकों का, श्राविकाओं का एवं युवारत्न साथियों का सान्निध्य पाकर सूर्यनगरी वासी अत्यन्त हर्षित हैं। जोधपुर में संघ की चारों शीर्ष संस्थाओं के अध्यक्ष सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए इसका भी जोधपुरवासियों को प्रमोद है। सम्मान-समारोह के सुन्दर आयोजन की स्मृति भी सदा बनी रहेगी।

उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के चातुर्मास से जोधपुर में श्रावक-श्राविकाओं का धर्म साधना की ओर जुड़ाव बढ़ने से संघ की गरिमा बढ़ी है।

सरस्वतीनगर— सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी (मंजूजी) म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में दीपावली पर तेले की तपस्या हुई तथा उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ। इसके पूर्व शरद पूर्णिमा की रात्रि श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-आराधनापूर्वक व्यतीत की। आश्विन में ६ दिन आयम्बिल साधना का ठाट रहा। कार्तिक शुक्ला ६ को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा जयन्ती तप-त्याग के साथ मनायी गई। चातुर्मास में श्रावक-श्राविकाओं में अच्छी लगन है। श्रीमती एवं श्री माणकचन्द सा बरड़िया, श्रीमती एवं श्री गणपतराज सा भंसाली एवं श्री मंगलचन्द सा दरड़ा ने अक्टूबर २००३ में आजीवन शीलव्रत के खंद किये। प्रार्थना में नवयुवकों की संख्या अच्छी रहती है। अनेक बहनों ने भक्तामर, प्रतिक्रमण, २५ बोल, दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन, महावीराष्टक स्तोत्र, वीरत्थुई आदि कण्ठस्थ किए हैं। श्रीमती इन्दुबाई कवाड़ ने उत्तराध्ययन के २७ अध्ययन कण्ठस्थ कर लिए हैं। रविवारीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता सफल रही है। दया-व्रत का आराधन सम्पूर्ण चातुर्मास में नियमित रूप से चल रहा है। बहनों ने भिक्षु दया एवं घर से टिफिन लाकर भी दयाव्रत किया। महासती श्री पुनीतप्रभा जी ने आयम्बिल ओली एवं तेले की तपस्या की है। चातुर्मास में श्री इन्द्रचन्द जी देसरला, श्री पारसजी ओस्तवाल, श्री अमरचन्द

जी मेहता, श्री आनन्द जी कवाड़ , श्री जवरीलाल जी कवाड़ आदि भाई-बहनों ने सेवा का पूरा लाभ लिया।

निफाड़-व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा ६ के पावन सान्निध्य में २७ से ३१ अक्टूबर तक बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ६५ शिविरार्थियों ने ज्ञानार्जन कर अपने को लाभान्वित किया। यहाँ पर ४ मासखमण तप हुए है, जो निफाड़ ग्राम के लिए एक उपलब्धि है। १५ एवं उससे अधिक की तपस्याएँ १३, ११ दिवसीय तपस्या ११ एवं ५ अठाई तप हुए हैं। महासती जी के मुखारविन्द से ५ धर्मबन्धुओं ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। ७ भाइयों एवं १५ बहनों ने प्रतिक्रमण सीख कर अपनी जीवनचर्या में धार्मिक क्षेत्र में नया मोड़ दिया है। जैन समाज महासतीवृन्द के त्याग-वैराग्य एवं सरलतम व्यवहार से अभिभूत एवं प्रभावित है। प्रतिदिन नियमित प्रार्थना, प्रवचन, चौपाई, ज्ञानचर्चा से संघ में स्वाध्याय का बिगुल बज गया है।

शाहीबाग-अहमदाबाद-व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में ३ नवम्बर २००३ से संस्कार शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें लगभग १४० शिविरार्थियों के भाग लेने की संभावना है। इस शिविर में बालक-बालिकाएँ प्रातः ८ से सायं ४ बजे तक तथा बहिने अपराह्न २ से ४ बजे तक भाग लेगी। शरदपूर्णिमा पर यहाँ ६८ बहिनों ने १५-१५ सामायिक की आराधना की। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ४१वें दीक्षा-दिवस पर ८६ भाई-बहनों ने एकाशन, दया आदि के रूप में धर्म साधना की। दीपावली पर ५५ भाई-बहिनों ने तपाराधन किया।

बीजापुर-विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में यहाँ पर १ मासखमण, १५ पन्द्रह दिवसीय तप, ५ ग्यारह दिवसीय तप एवं ५ नौ दिवसीय तप हुए हैं। सम्वत्सरी महापर्व के दिन एक साथ २८ अठाई तप के प्रत्याख्यान का दृश्य अद्भुत रहा। १२ से १४ अक्टूबर २००३ तक बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ५५ शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। कई बहिनों ने थोकड़ों का ज्ञान बढ़ाया है। संघ में सौहार्द एवं समन्वय का अच्छा वातावरण है।

कोटा-व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी (सोहनजी) म.सा. महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में कार्तिक शुक्ला ११ दिनांक ४.११.२००३ को साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का प्रथम पुण्य-दिवस तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। ६४ वर्ष के संयमी जीवन की स्मृति में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने ६४ की संख्या में नवकारसी, पौरसी, सामायिक, एकाशन, शीलव्रत आदि के त्याग-प्रत्याख्यान लिये। महासती जी के

पुण्य-दिवस के उपलक्ष्य में १२५ के लगभग नीवीं की आराधना हुई। नीवीं की व्यवस्था श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, कोटा द्वारा रखी गई।

चौथ का बरवाड़ा–व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में कार्तिक शुक्ला षष्ठी को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ४१वाँ दीक्षा दिवस तप-त्याग पूर्वक मनाया गया, जिसमें पोरवाल क्षेत्र के अनेक ग्राम-नगरों के श्रद्धालु श्रावक उपस्थित थे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत सहित संघ एवं संघ से संबद्ध संस्थाओं के अनेक मान्य पदाधिकारियों का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। महासती मण्डल के सान्निध्य में यह चातुर्मास धार्मिक आराधना के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियों से समन्वित रहा है। २७ से ३० अक्टूबर तक यहाँ धार्मिक शिक्षण शिविर भी आयोजित हुआ, जिसमें २३८ बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। चौथ का बरवाड़ा संघ सेवा में तत्पर रहकर प्रमोद का अनुभव कर रहा है।

नदबई–व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा. महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के पावन सान्निध्य में प्रतिदिन आयम्बिल, नमस्कार मंत्र का जाप , दया-संवर और तेले की लड़ी चल रही है। छोटे से ग्राम में २०० से अधिक तेले की तपस्या और ३५ अठाई तप उल्लेखनीय है। ग्राम एवं निकटवर्ती क्षेत्रों का धर्मानुराग प्रशंसनीय है। यहाँ दयाव्रत के ४ मासखमण हो चुके हैं। धर्मचक्र, पचरंगी, नवरंगी, भिक्षुदया आदि के रूप में धर्माराधन स्तुत्य है। ५ दिवसीय बालक-बालिकाओं का शिविर अक्टूबर माह में आयोजित हुआ, जिसमें ५३ शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। सामायिक एवं प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने वालों की अच्छी संख्या इस ग्राम का गौरव है। १५० वर्षों के इतिहास में यहाँ पर पहला चातुर्मास हुआ है तथा इससे सम्पूर्ण पल्लीवाल क्षेत्र में धर्म की प्रभावना हुई है।

कुश्तला–व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में यहाँ पर २६ अठाई तप एवं १६० तेले की तपस्या हुई है। ११ दिवसीय तप ४, ६ दिवसीय तप २ एवं ५ पचोले हुए है। २ बार धर्मचक्र एवं ३ बार पचरंगी तप पूर्ण हो चुके है। पर्युषण पर्व के ८ दिनों तक प्रतिदिन २४ घंटे के अखण्ड जाप आयोजित हुए। नवयुवक मण्डल, बालिका मण्डल एवं महिला मण्डल में धार्मिक शिक्षण के कार्यक्रम नियमित रूप से चल रहे है। दर्शनार्थियों का आवागमन बराबर बना हुआ है।

भोपालगढ़ एवं सतारा में भी उल्लेखनीय धर्माराधन, ज्ञानाराधन एवं तपाराधन हुआ है, जिसकी महक सर्वत्र फैली है।

-अरुण मेहता, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

कोटा, चौथ का बरवाड़ा व नदबई में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

कोटा—कोटा महिला संघ के तत्त्वावधान में दिनांक २६ अक्टूबर से ४ नवम्बर २००३ तक सात दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन मधुर व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में किया गया। शिविर में ६६ महिला शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को चार कक्षाओं में विभाजित कर अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार अध्यापन कराया गया। सभी शिविरार्थियों ने बोर्ड के फार्म भरे हैं। शिविर समापन का कार्यक्रम ४ नवम्बर २००३ को व्याख्यान में रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पानाचन्द जी जैन ने, मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार जी जैन, उप पुलिस अधीक्षक, कोटा थे एवं विशिष्ट अतिथि श्री कुशलराज जी मेहता, श्री जगजीवन जी मुणोत, श्री वर्द्धमान जी कोठारी थे। सभी शिविरार्थियों को समान पुरस्कार श्री वर्द्धमान जी कोठारी एवं प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को विशेष पुरस्कार श्री जगजीवन जी मुणोत की ओर से प्रदान किये गये। शिविर में अध्यापन कार्य श्रीमती शान्ता जी मोदी- जयपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर द्वारा करवाया गया। महासती मण्डल ने भी अध्यापन में अच्छा सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा द्वारा किया गया।

चौथ का बरवाड़ा—श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ, चौथ का बरवाड़ा व श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में पोरवाल क्षेत्र के चौथ का बरवाड़ा (जिला-सवाईमाधोपुर) में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक २७ अक्टूबर से ३० अक्टूबर २००३ तक किया गया। इस चार दिवसीय शिविर में पोरवाल क्षेत्र के १८ स्थानों के २३८ बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में अध्यापन हेतु श्रीमती मोहिनी देवी जी जैन-आलनपुर, श्रीमती कान्तिबाई जी जैन-आलनपुर, श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री गौतमचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री विरेन्द्र जी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोक जी जैन-विद्यापीठ जलगांव, श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री विनोद जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री राहुल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री महेशचन्द जी जैन-संस्थान जयपुर, श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। शिविर में परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर का समापन दिनांक ३०.१०.०३ को हुआ। समापन समारोह में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-मुम्बई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की अध्यक्ष

श्रीमती सुशीला जी बोहरा- जोधपुर, अ.भा. श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुषमा जी सिंघवी-जयपुर, अ.भा. युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई के साथ-साथ संघ के अन्य पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे। शिविर में आवास, भोजन एवं पुरस्कार की व्यवस्था श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ, चौथ का बरवाड़ा द्वारा की गयी।

नदबई— श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई व श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में पल्लीवाल क्षेत्र में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक १८ से २२ अक्टूबर २००३ तक किया गया। इस पंचदिवसीय शिविर में भरतपुर, खौह, खेरली, नदबई, डहरामोड आदि स्थानों के ५३ बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में अध्यापन हेतु श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्री जगदीशप्रसाद जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री विरेन्द्र जी जैन-जोधपुर, श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती कमला जी मेहता-जोधपुर ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। शिविर में परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा ३ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर का समापन दिनांक २२.१०.०३ को स्थानीय संघाध्यक्ष की अध्यक्षता व विशिष्ट अतिथि श्री ज्ञानचन्द जी जैन, नदबई की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिविर में आवास, भोजन एवं पुरस्कार की व्यवस्था श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई द्वारा की गयी।

चौथ का बरवाड़ा एवं नदबई दोनों ही शिविरों में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन करवाया गया। शिविर कक्षाएँ प्रातः ६:३० से प्रारम्भ होकर रात्रि ९:०० बजे तक चलती थी। बच्चों के ज्ञानवर्द्धन हेतु अनेक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई, जिसमें सभी बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। दोनों ही शिविरों में संचालन स्वाध्याय संघ में कार्यरत श्री विरेन्द्र जी जैन ने किया।

संघाध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत का पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र का सार्थक प्रवास

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नव-निर्वाचित संघाध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने दीपावली पश्चात् संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों के साथ पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर संघ सदस्यों को संघ-सेवा में सक्रिय किया।

प्रवास कार्यक्रम में संघाध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की अध्यक्ष माननीया श्रीमती सुशीला जी बोहरा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष माननीया डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष माननीय श्री अशोक

जी कवाड़ के अतिरिक्त शासन सेवासमिति के सदस्य माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला, युवारत्न साथी श्री ललित जी बाघमार ने भाग लिया।

दिनांक २८ अक्टूबर को नदबई में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी महाराज आदि ठाणा ३ के प्रवचन-श्रवण लाभ के साथ संघ सदस्यों से मिलने, बातचीत करने एवं उनकी समस्या के समाधान के साथ संघ-सेवा में सबको सक्रिय रहकर जीवन को प्रामाणिक बनाए रखने की संघाध्यक्ष हीरावत साहब ने विशेष रूप से प्रेरणा की। नदबई श्री संघ ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया।

दिनांक २६ अक्टूबर को हिण्डौन सिटी और गंगापुर सिटी के श्रावक-श्राविकाओं से सम्पर्क कर उन्हें संघ-सेवा में सक्रिय रहने का आह्वान किया गया। हिण्डौन एवं गंगापुर के स्थानीय संघ पदाधिकारियों ने संघ की चार शीर्ष संस्थाओं के अध्यक्षों को एक साथ अपने बीच पाकर प्रमोद व्यक्त किया एवं अपने-अपने क्षेत्र की ओर से स्वागत-अभिनन्दन कर संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों का बहुमान किया।

दिनांक ३० अक्टूबर को चौथ का बरवाड़ा जहाँ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ चातुर्मासार्थ विराजमान हैं, के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण तथा सुख शांति पृच्छा के साथ बालक-बालिकाओं के शिक्षण शिविर तथा पोरवाल क्षेत्रीय सम्मेलन में संघाध्यक्ष हीरावत साहब सहित संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों ने अपने विचारों से लाभान्वित किया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण के कारण पोरवाल क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं ने क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित कर संघाध्यक्ष महोदय से प्रत्यक्ष सम्पर्क साधा जो वस्तुतः अनुकरणीय है। सवाईमाधोपुर, बजरिया, हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में समय का योग देकर संघाध्यक्ष महोदय ने संघ सदस्यों को संघ-सेवा में जागृत किया। कुश्तला जहाँ महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मास है वहाँ पहुंचकर दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

दिनांक ३१ अक्टूबर को औद्योगिक नगरी कोटा में जहाँ व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मास है दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं शिविर निरीक्षण के साथ श्रावक-श्राविकाओं से व्यक्तिशः सम्पर्क कर संघाध्यक्ष महोदय ने पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र का त्रिदिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न किया।

दिनांक ३ व ४ नवम्बर को जोधपुर विराजित परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-मुनिराजों, साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं संघ व

संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों से संघहित के विविध विषयों पर विचार-चिन्तन का कार्यक्रम रखा है।

स्वर्णपदक प्राप्ति एवं क्रमिक ज्ञानवृद्धि का स्वर्णिम अवसर

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा विभिन्न केन्द्रों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखकर आगामी परीक्षा १ से ११ कक्षा तक के लिये दिनांक ११.०१.२००४, रविवार को दोपहर १२ से ३ बजे तक आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। इस परीक्षा के संबंध में निम्न बातें विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं-

१. नये व पुराने सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाना अनिवार्य है।

२. आवेदन-पत्र भिजवाने की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर २००३ है।

३. कक्षा पहली से लेकर चौथी तक के सभी प्रश्नों के उत्तर प्रश्न-पत्र में ही लिखने हैं। उन्हें अलग से उत्तरपुस्तिका नहीं दी जायेगी। प्रश्न-पत्र भाग अ, ब नहीं होकर एक ही रहेगा।

४. पांचवी व उससे ऊपर की कक्षाओं में पहले की तरह भाग अ तथा ब दो प्रश्न-पत्र होंगे। भाग ब के उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखने होंगे।

५. कक्षा १ से ५ तक के लिये पिछली कक्षा के सूत्र व तत्त्व विभाग में से १० अंक के प्रश्न पूछे जायेंगे।

६. प्रत्येक कक्षा में वरीयता सूची (मेरिट लिस्ट) में प्रथम स्थान पाने वालों को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया जायेगा।

ये परीक्षाएँ जैन धर्म के क्रमिक अध्ययन में अत्यधिक सहायक हैं। अतः इनका अवश्य लाभ उठावें। सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं अन्य सभी पाठकों से अनुरोध है कि आप स्वयं इस परीक्षा में भाग लें तथा अन्य लोगों को भी भाग लेने की पुरजोर प्रेरणा करने की कृपा करावें।-***विमला मेहता, संयोजक-अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) 342001, फोन नं. 0291-2630490***

सोलहवाँ मूर्तिदेवी पुरस्कार

नई दिल्ली— भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा वर्ष २००२ के मूर्तिदेवी पुरस्कार हेतु प्रस्ताव आमन्त्रित हैं। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी ऐसी चिन्तनपरक ज्ञानात्मक कृति के लिए दिया जाता है जो भारतीय दर्शन तथा सांस्कृतिक धरोहर के व्यापक आदर्शों पर आधारित मानवीय मूल्यों को निरूपित, अभिव्यंजित और रेखांकित करती हो। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित सभी भाषाएँ इस पुरस्कार की विचार परिधि में आती हैं। पुरस्कार राशि एक लाख रुपये है। पुरस्कार हेतु प्रस्ताव ३१ दिसम्बर २००३ तक प्राप्त होने चाहिए। प्रस्ताव-प्रपत्र एवं नियमावली हेतु सम्पर्क सूत्र- प्रभाकर श्रोत्रिय, निदेशक, भारतीय ज्ञानपीठ, १८-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी

रोड़, नई दिल्ली- ११०००३

भवानीमण्डी में अहिंसा-सम्मान समारोह

अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता एवं जीवदया के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले तीस प्राणिमित्र कार्यकर्ताओं को गांधी जयंती के पुनीत पावन अवसर पर अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, भवानीमण्डी द्वारा आयोजित अहिंसा सम्मान-समारोह में सम्मानित किया गया।

समिति के युवा संचालक प्राणिमित्र श्री नितेश जी नागोता जैन के अनुसार अहिंसा सम्मान समारोह भारतीय जीव जन्तुकल्याण बोर्ड के अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद न्यायमूर्ति श्रीमान् गुमानमल जी लोढ़ा के मुख्य आतिथ्य एवं उदारमना सेवाभावी सुधर्म संघ-अध्यक्ष श्रीमान् विनय कुमार जी जैन, जोधपुर की अध्यक्षता और तत्त्वज्ञ श्रीमान प्रेमचन्द जी कोठारी-बून्दी, श्रीमान् चंचलमल जी चोरड़िया-जोधपुर, श्रीमान् भीखमचन्द जी बाफना-चेन्नई एवं श्रीमान् दीपचन्द जी जैन, उन्हेल (नागेश्वर) के विशिष्ट आतिथ्य में सांनद संपन्न हुआ। समारोह में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट अहिंसात्मक कार्य करने वाले चौदह कार्यकर्ताओं को पाँच हजार रुपये नगद, स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। अन्य ग्यारह अहिंसाप्रेमी कार्यकर्ताओं तथा पाँच पत्रकारों को स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री गुमानमल जी लोढ़ा ने अहिंसा प्रचार समिति के सार्थक एवं दिशाबद्ध प्रयासों की सराहना करते हुए देश में होने वाली हिंसक प्रवृत्तियों के विरुद्ध एकजुट होकर पुरुषार्थ करने का आह्वान किया।

अहिंसा सम्मान समारोह में आगन्तुक समस्त अहिंसाप्रेमी कार्यकर्ताओं से पन्द्रह सूत्रीय संकल्प पत्र भरवाये गये तथा जीवन व्यवहार संबंधी विविध आवश्यक जानकारियां उपलब्ध कराई गई। आगामी वर्ष में समिति की २६० शाखाओं की स्थापना एवं ग्यारह हजार से भी अधिक कार्यकर्ताओं को संगठन से जोड़ने का आह्वान किया गया। ***–चंदालाल जैन–अध्यक्ष, भवानीमण्डी (राज.)***

जैन तत्त्व प्रकाश पर एक लाख एक हजार का बम्पर पुरस्कार
(Open Book Exam, Delhi)

पंजाब सिंहनी उप्र. महासती केसरदेवी जी पू. महासती विमला श्री जी एवं पू. महासती उर्मिला श्री जी की सुशिष्या श्रुतप्रेमी साध्वी-युगल निधि-कृपा के संयोजन और श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, दिल्ली एवं मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, चेन्नई के द्वारा ३० अक्टूबर २००३ को अखिल भारतीय जैन ज्ञान प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया जा रहा है।

विषय– पूज्य श्री अमोलकऋषि जी द्वारा लिखित 'जैन तत्त्व प्रकाश' ग्रंथ के ७०० पृष्ठों पर पूछे गए ५०० प्रश्नों के उत्तर, चार मास की अवधि में लिखकर **५ मार्च २००४** तक दिल्ली भेजने हैं।

प्रश्न–पुस्तिका प्राप्ति स्थान–१. Maitri Charitable Foundation, 2-Murugappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079(T.N.) Tel# 044-25297395 (निर्मल भंडारी), 044-26425727 (उत्तम कांकरिया)

२. श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, R-1, A.U.Block, Uttari Pitampura, Delhi-110088, Tel#011-27343170

३. Vinod Kimtee, Gokul Pulses & Besan Mill, Mukhtiyar Ganj, Hyderabad-12, Tel# 24619374, 55502409 M-(9849011350)

४. एस.एस. जैन संघ, जैन स्थानक (सदर बाजार), ४४६३/१४, मेन रोड़, पहाड़ी धीरज, दिल्ली (Suresh Jain) Tel#011-23673952, (D.C.Jain) Tel# 011-23548897, 23542252, M-98990-85202

५. B.Shantilal Kankaria, Ahuja Chambers, 1-Kumara Krupa Road, Bangalore-560001, Tel# 2262276, 2861452

६. अमोल जैन ज्ञानालय, 1755/1756, Gali No.2, Dhuliya (Maharashtra) Pin-424001, Tel# 02562-222762, 237923

७. Madhu Jain, 81-Veer Nagar, Gurmandi, Delhi-110007, Tel# 011-27221581, 27233256

सूचनाएँ– १. प्रश्न-पुस्तिका का मूल्य २० रुपये है और बाहर भेजने पर ३० रुपये की है। २. जैन तत्त्व प्रकाश ग्रंथ आपको जहाँ उपलब्ध होता हो वहाँ से खरीदें अथवा अनमोल जैन ज्ञानालय १७५५/१७५६, गली नं. २, धुलिया (महाराष्ट्र) फोन नं. ०२५६२-२३७९२३ से प्राप्त करें। ३. बम्पर ईनाम के अलावा १० विशेष पुरस्कार भी हैं। शेष सभी प्रतियोगियों को प्रेरक पुरस्कार मिलेगा। ४. एक परिवार में एक ही प्रश्न पुस्तिका लेनी है। ३१ दिसम्बर २००३ तक ही प्रश्न पुस्तिका मिलेगी। ५. सामूहिक रूप से प्रश्न-पुस्तिका मंगवाएँ तो हमें अधिक सुविधाजनक रहेगा।

पत्राचार द्वारा जैन दर्शन/जैन इतिहास पाठ्यक्रम

पुणे की जैन फ्रेण्डस् संस्था ने जैन दर्शन और जैन इतिहास इन दो विषयों पर पत्राचार पाठ्यक्रम बनाये हैं। दोनों पाठ्यक्रमों के पाठ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जैन विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं। आप घर बैठे इन पाठ्यक्रमों को पूरा कर सकते हैं। इनकी परीक्षा भी घर बैठे दी जा सकती है। उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाणपत्र दिया जायेगा। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए अर्हता १२वीं कक्षा/समकक्ष उत्तीर्ण होना आवश्यक है, पाठ्यक्रमों की कालावधि ६ माह है, पाठ्यक्रम का माध्यम हिन्दी/अंग्रेजी है।

अधिक जानकारी व आवेदन पत्र हेतु अपना नाम व पता लिखा हुआ ९" x ४" साइज का लिफाफा चार रुपये मूल्य के डाक टिकट लगाकर इस पते पर भेज दें।–जैन फ्रेन्डस्, पो. बॉक्स नं. ५८, चिंचवड़ पूर्व, पुणे-४११०१९(महा.)

पोरवाल परिचायिका २००३ का प्रकाशन

बजरिया (सवाईमाधोपुर)—श्री पद्मावती पोरवाल प्रकाशन ने पोरवाल परिचायिका २००३ का प्रकाशन किया है। इसके विमोचन के अवसर पर जानकारी देते हुए बताया गया कि १८० पृष्ठों में समाहित इस परिचायिका में सवाईमाधोपुर, कोटा, इन्दौर, जयपुर सहित २२ स्थानों के, १२८३ परिवारों का विस्तृत परिचय मय गोत्र के उपलब्ध कराया गया है। परिचायिका का परिवर्द्धित संशोधित नवीन संस्करण शीघ्र ही उपलब्ध कराया जाएगा, जिसमें संशोधन एवं परिवर्द्धन हेतु समाज के जागरूक सदस्य जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं। विमोचन समारोह की अध्यक्षता वैद्य गोपाललालजी जैन, अलीगढ़ ने की तथा मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन 'राजा', जयपुर थे। श्री विमलचन्द जी जैन, इन्दौर, पुष्प कुमार जी जैन, कोटा, हनुमानप्रसाद जी जैन आदि अनेक विशिष्ट अतिथि थे। परिचायिका का सम्पादन सुनील जैन सुपुत्र श्री महावीरप्रसाद जी जैन 'लोहिया' ने किया है। **परिचायिका प्राप्ति स्थल**— १.श्री रूपचन्द जी जैन मोदी, जयपुर- २७८३२५२(घर),२. श्री भेरूलाल जी जैन,कोटा-२३६४११६ (घर), ३. श्री संदीप कुमार जैन, इन्दौर-२३४१६६१(घर), ४. श्री पद्मावती पोरवाल प्रकाशन, ए-६६, बजरिया, सवाईमाधोपुर- ०७४६२- २२०४४२। ***—सुनील जैन लोहिया, बजरिया***

अ.भा. निबंध स्पर्धा का आयोजन

नगरी (छत्तीसगढ़)—आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा घोषित 'श्रमणोपासक वर्ष' के उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ समता प्रचार संघ नगरी द्वारा एक अखिल भारतीय निबन्ध स्पर्धा का भव्य आयोजन किया गया है जिसका विषय रखा गया है- **श्रमणोपासक कैसा हो?** शब्द सीमा ५०० रखी गई है। स्पर्धा में भाग लेने के लिए उम्र बंधन नहीं है। यह स्पर्धा स्व. रतनलाल जी मारोठी की पुण्य स्मृति में श्रीमती कमलाबाई सुरेन्द्रकुमार जी मारोठी, देशनोक के सौजन्य से आयोजित की गई है। प्रथम पुरस्कार १०००/- (एक हजार रुपये), द्वितीय पुरस्कार ७००/- (सात सौ रुपये), तृतीय पुरस्कार ५००/-(पाँच सौ रुपये), चतुर्थ पुरस्कार ३००/- (तीन सौ रुपये), पंचम पुरस्कार २००/- (दो सौ रुपये) एवं दस अन्य प्रतियोगियों को सौ-सौ रुपये के पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। निबंध भेजने की अंतिम तिथि- १५ दिसम्बर २००३ है। **निबंध भेजने का पता**— महेश नाहटा, पो. नगरी, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़) ४९३७७८ ***—गंभीर सांखला***

शाकाहार अभियान

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र जी मोदी ने गांधी जयन्ती- २ अक्टूबर २००३ से गुजरात में अन्तर्राष्ट्रीय शाकाहार अभियान छेड़ा है।

—अहिंसा प्रेमी मनीष सालेचा, भवानीमण्डी

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई– रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, चेन्नई तथा अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा संचालित अखिल भारतीय प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के चतुर्थ सत्र में २४ विद्यार्थियों ने जून २००३ में परीक्षा दी। चन्दनबाला चोरड़िया ने चेन्नई केन्द्र पर प्रथम एवं अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

– ***डॉ. प्रिया जैन***

दिल्ली– दिल्ली सरकार ने दिल्ली के पीतमपुरा क्षेत्र में नवनिर्मित २०० बिस्तरों के हॉस्पिटल का नाम 'भगवान महावीर हॉस्पिटल' रखा है। –***प्रो. रतन जैन***

ब्यावर– शरदपूर्णिमा की रात्रि में १० अक्टूबर २००३ को ७० बहनों ने महासतीजी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त न होने पर भी बरेली के स्थानक में ११०० सामायिकों का लाभ लिया। प्रत्येक बहन ने लगभग १५ सामायिकें की।

जोधपुर– बादलचन्द सुगनकंवर चोरड़िया विद्यालय के प्रथम तल पर संचालित धार्मिक शोध पुस्तकालय, सेवामन्दिर, जोधपुर के तत्त्वावधान में १६ अक्टूबर २००३ को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जैन विद्या के शीर्षस्थ विद्वान डॉ. सागरमल जी जैन, शाजापुर की अध्यक्षता में आयोजित इस विचार गोष्ठी में श्री आसूलाल जी संचेती ने अनेकान्तवाद पर विचार व्यक्त किए। गोष्ठी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर डॉ. सागरमल जी जैन ने विद्वत्तापूर्ण ढंग से दिया। गोष्ठी का संचालन डॉ. महेन्द्र जी भण्डारी ने किया। गोष्ठी में स्थानीय विद्वान्, अधिवक्ता एवं गणमान्य जिज्ञासु उपस्थित थे। गोष्ठी अब प्रतिमाह संचालित होगी, एतदर्थ डॉ. धर्मचन्द जैन को संयोजक एवं श्री शुभराज मेहता को सह संयोजक मनोनीत किया गया है।

माण्डलगढ़– राजकीय बालिका उच्च्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं द्वारा १२ अक्टूबर२००३ को चेतना रैली निकालने के पश्चात् आयोजित सभा में साध्वी सुधाकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से २५० छात्राओं, अभिभावकों एवं सम्भ्रान्त नागरिकों ने आजीवन गुटखा सेवन के त्याग का नियम अंगीकार किया। सभा का मुख्य संयोजन डॉ. गुलाबसिंह जी दरड़ा पूर्व आई.ए.एस. ने किया। – ***प्रधानाचार्य***

बधाई

गंगापुर सिटी– सुश्री राखी जैन (सुपुत्री श्री सतीशचन्द जी एवं श्रीमती सुन्दरी जैन) सुपौत्री श्री अमीरचन्द जी जैन, सेवानिवृत्त आर.ए.एस. ने वर्ष २००३ में आयोजित राजस्थान प्री. मेडिकल टेस्ट (आर.पी.एम.टी.) में ८४.३ प्रतिशत अंक अर्जित कर ६०वां स्थान प्राप्त किया है। सुश्री जैन ने एम.बी.बी.एस. में प्रवेश ले लिया है। –***शिवचरणलाल जैन***

चेन्नई– करुणा इण्टरनेशनल, चेन्नई के अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी जैन को वर्ष

२००३-२००४ के लिए 'राजस्थान श्री पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार राजस्थानी एसोसिएशन द्वारा प्रदान किया जाता है। आप विवेकानन्द एज्यूकेशनल ट्रस्ट के संस्थापक, ट्रस्टी एवं अध्यक्ष हैं तथा विवेकानन्द एज्यूकेशनल सोसायटी, विद्याभारती आदि संस्थाओं से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। आप जिनवाणी के मोती, Pearls of Jain wisdom और जिनवाणी के निर्झर आदि पुस्तकों के प्रणेता हैं।

इन्दौर– श्री अजय कुमार जैन सुपुत्र श्री लड्डूलाल जी जैन देवली वालों की नियुक्ति टाटा कन्सलटेंसी सर्विसेज की मुम्बई स्थित मुख्य शाखा में साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हुई है। श्री जैन ने एम.सी.ए. का पाठ्यक्रम पूर्ण कर बैंगलोर में प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

श्रद्धांजलि

दिल्ली– धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजकुमारी जी जैन चोरड़िया धर्मपत्नी स्व. श्री नवरत्न चन्द जी चोरड़िया का ७८ वर्ष की उम्र में ६ सितम्बर २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी, सरल स्वभावी, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं विनम्र सेवाभावी थी। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित आपका जीवन धर्मनिष्ठता, सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप एक उदार हृदय, धर्मपरायण, आदर्श महिलारत्न थीं। आप धर्मनिष्ठ समाजसेवी थी और धार्मिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक अर्थ सहयोग प्रदान करती रहती थीं। आप आगमसूत्र व शास्त्र की ज्ञाता थीं। इन्हें 'शास्त्रोंवाली श्राविका'' भी कहा जाता था।। आप प्रतिदिन ५ सामायिक, प्रतिक्रमण, रात्रि चौविहार त्याग रखती थी तथा लगभग २७ वर्षों से पूर्ण निवृत्तिमय जीवन बिता रही थी। पूज्य संत-सतियों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। हर वर्ष चातुर्मास कराने की प्रेरणा देना,उसमें पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन देना आप अपना कर्त्तव्य मानती थीं। दीन-दुःखियों के प्रति आपके हृदय से करुणा, दया सतत प्रवाहित होती थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारशील परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर– सुश्रावक श्री किशनमल जी लोढ़ा का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के कार्यालय प्रभारी श्री प्रसन्नमल जी लोढ़ा के लघु भ्राता थे।

अहमदाबाद– श्री राजस्थान स्थानकवासी संघ, शाहीबाग के कर्मठ कार्यकर्ता, प्रखरवक्ता, बुलन्द आवाज के धनी, संघसेवा में समर्पित, संघ के लोकप्रिय मंत्री श्री लक्ष्मीलाल जी मोगरा का हृदयगति रुक जाने से ३ अक्टूबर २००३ को ५० वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे।

आपके निधन से स्थानीय संघ एवं समाज की गहरी क्षति हुई है। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। कविहृदय श्री मोगरा जी की वाक्छटा निराली थी।

-पदमचन्द जे. कोठारी, बाबूलाल हुण्डिया

साबरमती,अहमदाबाद- सुश्राविका श्रीमती सुन्दर देवी (चक्षुदाता) धर्मपत्नी स्व. श्री छोटमल जी गांग मेहता, साबरमती का ८४ वर्ष की उम्र में ६ अक्टूबर २००३, गुरुवार प्रातः नमस्कार महामंत्र का स्मरण करते-करते स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन तप-त्यागमय एवं सादगीपूर्ण था। आपके ४० वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत का नियम था। आप अत्यन्त सरल स्वभावी एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविका थीं जो कई वर्षों से प्रतिदिन ग्यारह सामायिक करती थीं और आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की अनन्य भक्त थीं। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों मनेश जी, राजेन्द्र जी, दिनेश जी तथा तीन पुत्रियों के साथ भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- स्व. सुश्रावक श्रीमान सायरचन्द जी बाफना की पुत्रवधू श्रीमती

मोहनीदेवी बाफना धर्मपत्नी श्री महावीरचन्द जी बाफना का दिनांक २०.१०.२००३ को पच्चक्खाणों के साथ देहावसान हो गया। श्रीमती बाफना धार्मिक विचारों से युक्त कर्मठ श्राविका रत्न थी। १३ साल की उम्र से आप रात्रि चौविहार-त्याग करने के साथ धोवन पानी का प्रयोग करती थी। आपके जमीकन्द का सर्वथा त्याग था। आचार्यप्रवर के १९८४ के चातुर्मास में आपने मासखमण की तपस्या की तथा जीवन में अनेक छोटी-मोटी तपस्याएँ भी की। आप जैन सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं तथा रात्रिकालीन संवर की साधना महासतियां जी के सान्निध्य में करती रहती थी। जीवदया, शैक्षणिक व धार्मिक कार्यों में सदैव मुक्त हस्त से दान देती थी। सामायिक- स्वाध्याय करने के साथ नियमित प्रतिक्रमण करती थी। नवकारसी, पौरसी करने के साथ पर्व तिथियों पर हरी सब्जी का त्याग रहता था। अन्तिम समय में आपकी भावना के अनुरूप नेत्रदान किया गया। गतवर्ष पालासनी चातुर्मास के समय श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से आपने शीलव्रत भी ग्रहण किया था। आपके सुपुत्र श्री मनोज जी एवं कमलेश जी व पुत्रवधू श्रीमती शर्मिला जी एवं शशिकला जी तथा पुत्री श्रीमती अरूणा जी धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया आदि का सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत है।

भोपालगढ़-श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री गुदड़मल कांकरिया का ३० अक्टूबर २००३ को आकस्मिक स्वर्गगमन हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावकरत्न थे। संघ-सेवा और संत-सेवा में आपका सदा सहयोग रहा। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.

रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द की सेवा में आप सदा तत्पर रहे। सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध आदि धर्म-साधना में आपकी रुचि व भावना प्रेरणादायी थी। आप भजन रसिक भी थे, भक्ति भावना से भजन गाते स्वयं भावविभोर होते वहीं श्रोताओं को भी अत्यधिक आनन्द की अनुभुति होती। व्रत-नियमों के परिपालन में भी आप सदा जागरूक रहे। विगत कुछ समय से स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होते हुए भी समय-समय पर दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा का आपका क्रम बराबर बना रहा।

मुम्बई—गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्रावक श्री सरदारमल जी मुणोत का २७ अक्टूबर २००३ को देहावसान हो गया। संघनिष्ठा, गुरुभक्ति व सेवा गुण की सौरभ से आपका जीवन ओतप्रोत था। परमाराध्य आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन से वे बहुत प्रभावित थे। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। संघ संरक्षक श्री मुणोत साहब ने परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बालकेश्वर चातुर्मास में शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद सेवा-भक्ति का लाभ लिया। वे जानकार बुजुर्ग और समर्पित श्रावक थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय समाचार

आचार्य महाप्रज्ञ को इन्दिरा गाँधी पुरस्कार

तेरापंथ संघ के आचार्य महाप्रज्ञ को राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव के प्रयास हेतु ३१ अक्टूबर २००३ को नई दिल्ली में सोनिया गाँधी द्वारा इन्दिरा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार आचार्यश्री के आज्ञानुवर्ती संतों एवं प्रतिनिधि मण्डल ने ग्रहण किया। इस पुरस्कार में डेढ़ लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है, जिसका उपयोग शिक्षण कार्यों में लेने की घोषणा की गई है।

पाँच राज्यों में राज्य विधानसभा के चुनाव सन्निकट

दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में १ दिसम्बर २००३ को तथा मिजोरम में २० नवम्बर को विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं। निर्वाचन आयोग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। प्रत्येक नागरिक का दायित्व बनंता है कि वह योग्य उम्मीदवार का चयन करे।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६३८६ श्री जगदीशराय जी जैन, रोहतक (हरियाणा)
६३८७ श्री प्रफुल्ल जी भंवरलाल जी नागौरी, सातारा (महा.)
६३८८ श्री रूपलाल जी नागौरी, सातारा (महा.)
६३८९ श्री राहुल जी झणकारमल जी गुगले, सातारा (महा.)
६३९० श्री धर्मीचन्द जी भण्डारी, बीजापुर (कर्नाटक)
६३९१ श्री मदनलाल जी मिश्रीलाल जी भंसाली, खामगांव, बुलढ़ाणा (महा.)
६३९२ श्री बी.डी. जैन जी, खामगांव, बुलढ़ाणा (महा.)
६३९३ श्री अजीतराज जी कांकरिया, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)
६३९४ श्री मोहित जी सुनील जी सिंघवी, पाली-मारवाड़ (राज.)
६३९५ श्री जी.प्रेमचन्द जी बागमार, चेन्नई (तमि.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

११०००/- कमला फाउण्डेशन, मुम्बई, श्री सरदारसिंह जी कर्णावट की पुत्रवधू श्रीमती नलिनी जी धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र जी कर्णावट के द्वारा न्यूयॉर्क में मासखमण की तपस्या करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५१००/- श्री प्रेम जी जैन, पूज्य माताश्री श्रीमती राजकुमारी जी चोरड़िया धर्मपत्नी स्व. श्री नवरतनचन्द जी चोरड़िया की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

२५०१/- श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी (मनोज बाफना एवं कमलेश बाफना की पूज्य माताश्री) श्रीमती मोहनीदेवी जी बाफना की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री व श्रीमती एन.सी. ढढ्ढा, जयपुर, श्री जयदीप जी व श्रीमती सरिता जी ढड्ढा के सजोड़े अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री दिनेश कुमार जी मेहता, साबरमती-अहमदाबाद, अपनी पूजनीय माताश्री श्रीमती सुन्दरदेवी जी मेहता का ६ अक्टूबर २००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री पुखराजजी भागचन्द जी पारख, जलगांव, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री राजुलाल जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया, सुपुत्र श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन के प्रधानाध्यापक माध्यमिक विद्यालय, भेडोली (स.मा.) में पदोन्नत होने की खुशी में भेंट।

२५०/- श्री चम्पालाल जी डागा (सम्पादक-श्रमणोपासक), बीकानेर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरबाई जी डागा का ११ सितम्बर २००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२०१/- श्रीमती भंवरीबाई जी बिशनचन्द जी छाजेड़, हैदराबाद, श्री दौलतराम जी छाजेड़ के ४१ उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान जोर-शोर से सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री अजितराज जी कांकरिया, मेड़ता सिटी, संसारपक्षीय अपनी बहिन महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ के चातुर्मास में दर्शनों के उपलक्ष्य में।

१५१/- श्री स्वरूपचन्द जी जैन, डहरा, हिण्डौनसिटी, अपने सुपुत्र श्री जिनेश कुमार जी जैन द्वारा अठाई तपस्या करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री हुण्डीवाल प्रकाशचन्द भंवरलाल जैन, जलगांव, धर्मपत्नी निर्मला जी द्वारा उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविका जी के सान्निध्य में पर्युषण में ११ उपवास, आयम्बिल ओली व दीपावली के तेले की तपस्या एवं सुपुत्र ललित व नितीन, सुपुत्री सीमा द्वारा पर्युषण में सेवा देने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्रीमती प्रेमलता जी जैन, जयपुर, श्री टी.आर. जैन की स्मृति में उनके ७८वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री कैलाश जी सिंघवी, जोधपुर, धर्मपत्नी कुसुम जी सिंघवी का दिनांक १४.०६.०३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।

१००/- श्री जशकरण जी सुरेन्द्र जी डागा, टोंक, उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सन्त-सतियों के सपरिवार दर्शन जोधपुर में करने तथा सदार आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५१/- श्री गौतममल जी गांग, जोधपुर, अपने दोहिते मास्टर मोहित सिंघवी पुत्र श्री सुनील जी सिंघवी की ६ अक्टूबर २००३ को छठीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५१/- श्री मनीष जी सालेचा, भवानीमण्डी, पचपहाड़ में स्थापित शाकाहार प्रचार समिति के अध्यक्ष पद पर श्री नन्दलाल जी बोहरा के निर्वाचित होने की खुशी में।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

११००/- श्री हंगामीलाल जी जैन, मुम्बई, सुपौत्री अपेक्षा जी जैन (सुपुत्री श्री अरुणकुमार जी जैन) के सी.ए. पास होने की खुशी में जीवदया में सप्रेम भेंट।

५०/- श्री स्वरूपचन्द जी जैन, डहरा, हिण्डौन सिटी की ओर से जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार-प्राप्त

५१०१/- श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मोहनीदेवी जी बाफना (मनोज बाफना एवं कमलेश बाफना की पूज्य माताश्री) की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

३००१/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भोपाल, पर्युषण सहायतार्थ।

१०५०/- श्री जैन श्री संघ, मानपुर, पर्युषण सहायतार्थ।

११०१/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जोबनेर, पर्युषण सहायतार्थ।

५०२/- श्री रूपचन्द जी सोहनलाल जी धारीवाल, पाली, पर्युषण सहायतार्थ।

१००/- श्री जशकरण जी डागा, टोंक, पर्युषण सहायतार्थ।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त सहायता

१००१/- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सिद्धिगंज (मगरदा) स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

५०१/- श्री शांतिलाल जी जैन (वीर पिता) चोरू, चि. मेघराज की शादी में स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

५०१/- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, देई, स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

१५०/- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुमेरगंजमण्डी, स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

१०१/- श्री जम्बूकुमार जी प्रकाशकुमारजी जैन, आलनपुर, पिताजी कजोड़ीलाल जी की पुण्यस्मृति में स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR

BRIGHT STAR DIAMOND CO.,LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House, 12th Floor, Suite 160-161, Suriwongse Road, BANGKOK 10500, Thailand G.P.O. Box No. 2088	Tel Fax Res Mobile	: : : :	237-8051, 237-8052 234-7648 (662) 237-6110 437-0910 01-6285733

|| श्री ||

रत्न वंशीय अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य
श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणाओं के चरण कमलों में कोटी कोटी वन्दन !

जय गुरु हस्ती *जय महावीर* *जय गुरु हीरा-मान*

SANJAY SURANA

DEEPAK SURANA

AADINATH
EXPORTS

The Trend Setter People

Manufacturers & Marketers :

TOYS • GAMES • NOVELTIES

31, Kurla Street, 2nd Floor, Opp. Satyam Collection,
Masjid Bunder (East), Mumbai 400 009, INDIA
Off.: 2377 4254 • Fax : 91-22-2374 6319
Mobile : 98200 73955, 3683 5318
Email: aadinathexports@hotmail.com

वीरेन्द्र कुमार बाघमलसा सुराना (नागौरवाले)
६/८३ वर्मानगर, जुना नागरदास रोड,
अंधेरी (पूर्व) मुंबई - ४०० ०६९.
फोन ; २६८३ ५३१८, २०५३ ७०५२

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

JAI GURU HASTI

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - *आचार्य श्री हस्ती*

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A Division of Prithvi Securities Limited

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008, Ph. : 8553185,/3059.
Website : www.prithvifx.com

CHENNAI
044-8553185
044-8553059

BANGALORE
080-5327812
080-5327813

PANJIM GOA
0832-231190
0832-420675

HYDERRABAD
040-23414333
040-23414777

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD
NAVARATHAN KAVAD
RAVINDRA KAVAD
ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

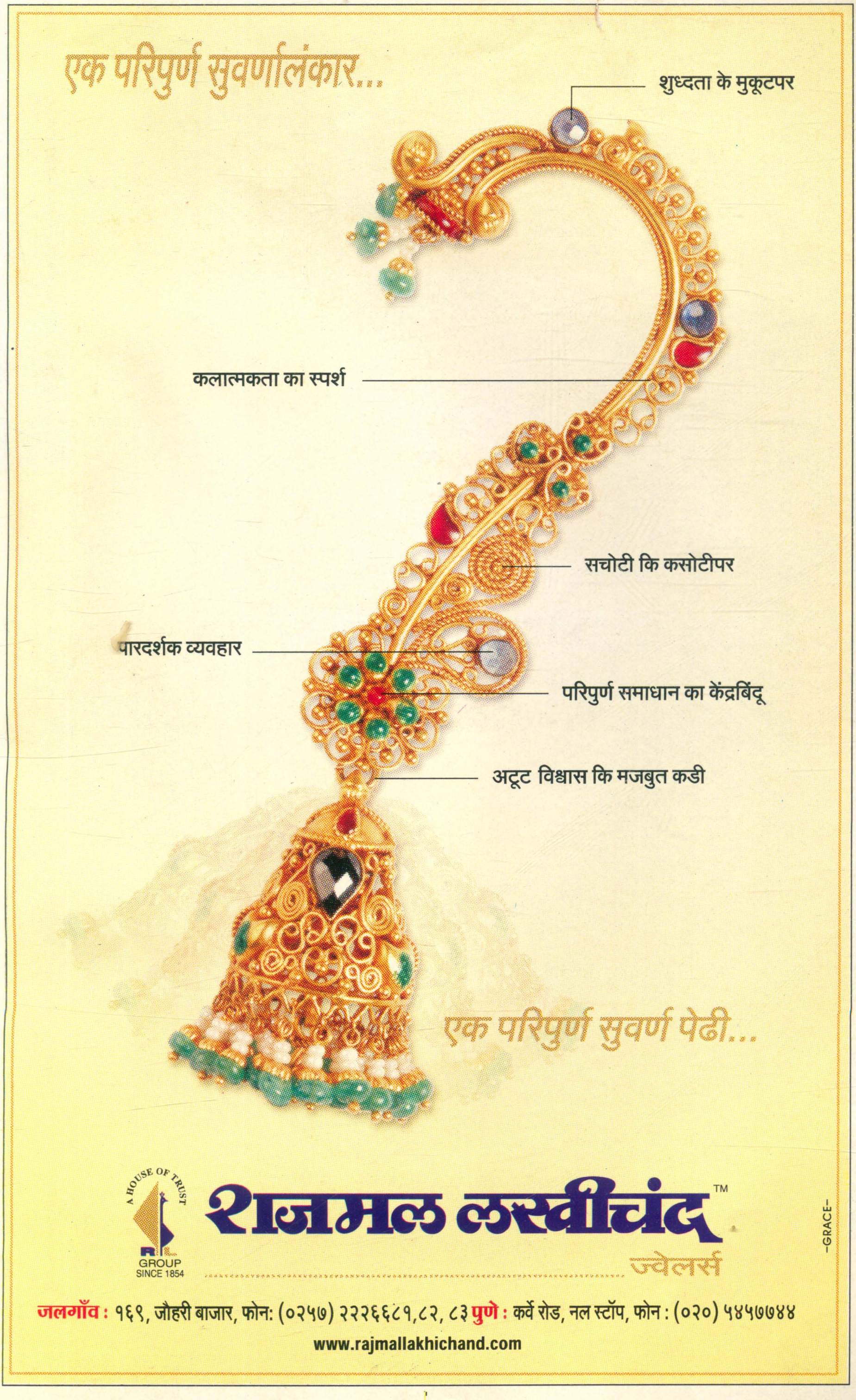
एक परिपुर्ण सुवर्णालंकार...
शुध्दता के मुकूटपर
कलात्मकता का स्पर्श
सचोटी कि कसोटीपर
पारदर्शक व्यवहार
परिपुर्ण समाधान का केंद्रबिंदू
अटूट विश्वास कि मजबुत कडी
एक परिपुर्ण सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
-GRACE-
जलगाँव : १६९, जौहरी बाजार, फोन: (०२५७) २२२६६८१,८२, ८३ पुणे : कर्वे रोड, नल स्टॉप, फोन : (०२०) ५४५७७४४
www.rajmallakhichand.com

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Stop existing

Start living

KALPATARU HABITAT

Dr. S. S. Rao Road, **Parel**

- 23 storeyed luxury twin towers
- 2 & 3 BHK Apts. & 4 BHK Penthouses
- Swimming pool, landscaped garden, clubhouse with gym & party lounge
- Squash & tennis court, mini golf putting green
- Independent car park building
- Tower B - ready possession
- Tower A - construction in full swing

KALPATARU RESIDENCY

Opp. Cine Planet, Off Sion Circle, **Sion**

- Premium 18 storeyed twin towers
- 2, 3 & 4 BHK Apts. & 3 BHK Penthouses
- Clubhouse with gym, squash court & party lounge
- Swimming pool, toddlers pool & landscaped garden
- Stilt & basement car parking
- Tower A - ready possession
- Tower B - nearing completion

KARMA-KSHETRA

Near Shanmukhanand Hall, **King's Circle**

- 25 storeyed towers with 2 wings
- 2 & 4 BHK Apts.
- Landscaped garden & clubhouse
- Independent car park building
- Ready possession

Other projects : Kalpataru Gardens - Kandivali (E), Siddhachal - Thane (W), Tarangan - Thane (W), Kamdhenu - Mulund (E), Kalpataru Enclave & Kalpataru Regency II - Pune.

KALPA-TARU **For details call: 2281 7171/2282 2888**
III, Maker Chamber IV, Nariman Point, Mumbai-400 021.
Fax : 2204 1548/2288 4778. E-mail : sales@kalpataru.com Visit : www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।